नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 39, नई दिल्ली, रविवार 17 मई 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता का कोई छोटा रास्ता नहीं होता, इसके लिए मेहनत की सीढ़ी ही चढ़नी पड़ती है।

02 विसरल फैट, अंगों के चारों ओर लिपट जाती है, और सबसे खतरनाक
06 नई तकनीक की सोच से भविष्य का भारत गढ़ रहे देश के ये विज्ञानी
08 उर्जा संकट, मोदी अपील पर झारखंड के सभी जिला कोर्ट अब हाईब्रिड मोड

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

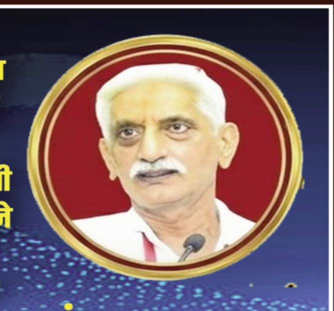

संजय बाठला
मुख्य संपादक

भारत का असली विदेशी मुद्रा संकट, क्या केवल विदेश यात्रा और सोना खरीदना रोक देने से देश मजबूत होगा?

वी बी भारद्वाज

आजकल सरकार और आर्थिक विशेषज्ञ जनता को बार-बार सलाह दे रहे हैं कि विदेशी यात्राएँ कम करें, सोना कम खरीदें, विदेशी वस्तुओं का प्रयोग सीमित करें, ताकि भारत का विदेशी मुद्रा भंडार (Forex Reserve) सुरक्षित रहे।

यह सलाह अपने स्थान पर गलत नहीं है, लेकिन क्या यही समस्या की जड़ है?

क्या केवल आम आदमी की विदेश यात्रा रोक देने से भारत आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन जाएगा?

असल प्रश्न कहीं अधिक गहरा है — और वह है भारत का शिक्षा पलायन (Education Outflow)।

हर साल लाखों करोड़ रुपये भारत से बाहर क्यों जा रहे हैं?

भारत से हर वर्ष लाखों विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाते हैं — अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, रूस, यूक्रेन, फिलीपींस, दुबई आदि देशों में।

एक औसत विद्यार्थी परः
ट्यूशन फीस
हॉस्टल
भोजन
इंश्योरेंस
यात्रा
जीवन-यापन
मिलाकर 40 लाख से 1.5 करोड़ रुपये तक खर्च हो जाते हैं।

यदि लाखों विद्यार्थी विदेश पढ़ने जाते हैं, तो अनुमान लगाइए कि भारत से कितनी विदेशी मुद्रा बाहर जा रही होगी।

यह रकम कई बार उन विदेशी यात्राओं और सोने की खरीद से भी कहीं अधिक होती है जिन पर जनता को दोष दिया जाता है।

असली प्रश्नः बच्चे विदेश क्यों जा रहे हैं?

क्या भारतीय माता-पिता अपने बच्चों को देश से दूर भेजना चाहते हैं?

अधिकांश मामलों में उत्तर है — नहीं।

वे मजबूर हैं क्योंकिः
भारत में विश्व स्तरीय सीटें बहुत कम हैं
सरकारी विश्वविद्यालयों की संख्या और गुणवत्ता सीमित है
निजी विश्वविद्यालय अत्यधिक महंगे हैं
शोध (Research) और Innovation का वातावरण कमजोर है
उद्योग और शिक्षा का तालमेल बहुत कम है
Practical exposure और Global standard infrastructure की कमी है

यानी समस्या जनता नहीं, व्यवस्था है।

सबसे बड़ा विरोधाभास
सरकार कहती हैः
विदेशी वस्तुएँ मत खरीदो
विदेश मत घूमो
डॉलर बचाओ

लेकिन दूसरी ओरः
लाखों विद्यार्थी हर साल विदेशी विश्वविद्यालयों को अरबों डॉलर दे रहे हैं
भारत के प्रतिभाशाली युवा वहीं बसते जा रहे हैं
Brain Drain लगातार बढ़ रहा है

यदि यही पैसा भारत की शिक्षा व्यवस्था में लगाया जाता, तो स्थिति बिल्कुल अलग हो सकती थी।

समाधान क्या है?

1. विश्व स्तरीय सरकारी विश्वविद्यालय

भारत को हर राज्य में ऐसे सरकारी विश्वविद्यालय बनाने चाहिए जोः
MIT, Stanford, Oxford जैसी गुणवत्ता के हों
आधुनिक Research Labs से लैस हों
AI, Robotics, Semiconductor, Biotechnology, Defence Technology जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित हों
विश्व के श्रेष्ठ प्रोफेसरों को आकर्षित करें।

2. निजी शिक्षा माफिया पर नियंत्रण

आज कई निजी विश्वविद्यालय शिक्षा कम और व्यवसाय अधिक बन चुके हैं।
अत्यधिक फीस
कमजोर faculty
औसत placement
चमकदार marketing
सरकार को शिक्षा को "profit business" बनने से रोकना होगा।

3. Industry + Education मॉडल

भारत में पढ़ाई अभी भी नौकरी से जुड़ी व्यावहारिक जरूरतों से काफी दूर है।

जरूरत हैः
Industry-linked courses
Paid internships
Research funding
Startup incubation
Manufacturing आधारित skill ecosystem

4. विदेशी विश्वविद्यालयों से प्रतिस्पर्धा

केवल विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत बुलाना समाधान नहीं है।

भारत को अपनी संस्थाएँ इतनी मजबूत बनानी होंगी कि विदेशी विद्यार्थी यहाँ पढ़ने आएँ।

जिस दिनःअफ्रीका,एशियामध्य, पूर्वयूरोप के विद्यार्थी
भारत पढ़ने आने लगेंगे, उस दिन भारत केवल "market" नहीं बल्कि "knowledge superpower" बनेगा।

शिक्षा खर्च नहीं, निवेश है।

यदि कोई विद्यार्थी विदेश जाकरः
उच्च तकनीक सीखता है
अनुभव प्राप्त करता है
फिर भारत लौटकर उद्योग, शोध या रोजगार पैदा करता है
तो वह देश के लिए संपत्ति है।

लेकिन यदि भारत अपने ही प्रतिभाशाली युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं दे पाता और वे स्थायी रूप से विदेश बस जाते हैं, तो यह केवल Forex Outflow नहीं बल्कि "National Talent Loss" भी है।

केवल जनता को दोष देना आसान है
सरकारों के लिए यह कहना आसान है किः
सोना मत खरीदो
विदेश मत जाओ
आयात कम करो
लेकिन कठिन कार्य हैः
शिक्षा सुधार
स्वास्थ्य सुधार
Research ecosystem बनाना
Manufacturing बढ़ाना
रोजगार पैदा करना

जब तक भारतः
शिक्षा
तकनीक
Innovation
Research
में आत्मनिर्भर नहीं बनेगा, तब तक केवल विदेशी यात्राएँ रोक देने से अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं होगी।

राष्ट्र निर्माण भावनात्मक नारों से नहीं, संस्थाओं से होता है

सच्चा राष्ट्रवाद यह नहीं कि जनता को केवल त्याग करने को कहा जाए।

सच्चा राष्ट्रवाद यह है कि सरकार ऐसी व्यवस्था बनाए जहाँः
युवा विश्व स्तरीय शिक्षा देश में पा सकें।
उद्योग बढ़ें
शोध बढ़े
विदेशी मुद्रा देश में आए
और भारत "Talent Exporter" नहीं बल्कि "Knowledge Leader" बने।

अंतिम प्रश्न सरकार से

यदि भारत चंद्रयान बना सकता है, डिजिटल भुगतान में दुनिया को दिशा दे सकता है, विशाल हाईवे और इंफ्रास्ट्रक्चर बना सकता है —

तो क्या भारत विश्व की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा व्यवस्था नहीं बना सकता?

और यदि बना सकता है,

तो फिर लाखों भारतीय परिवार अपनी जीवनभर की कमाई विदेशी विश्वविद्यालयों को देने के लिए मजबूर क्यों हैं?

एक बहुत बड़ा प्रश्न, जिसके बारे में आज 80 साल के स्वतंत्र भारत में किसी भी सरकार ने इसके बारे में कभी गंभीरता से नहीं सोचा। खेला तो नेता लोग और सरकारें ही करती रही।

निष्कर्ष

विदेश यात्रा रोकना, सोना कम खरीदना या विदेशी वस्तुओं का सीमित उपयोग करना एक छोटी आर्थिक रणनीति हो सकती है।

लेकिन भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता हैः

विश्व स्तरीय, सस्ती और शोध आधारित शिक्षा व्यवस्था।

जिस दिन भारत अपने युवाओं को देश में ही वैश्विक अवसर देना शुरू कर देगा,

उस दिन डॉलर बचाने की अपील करने की आवश्यकता बहुत कम रह जाएगी।

विद्या भूषण भारद्वाज, एक जिम्मेदार नागरिक एवं स्वतंत्र पत्रकार

डीजल संकट और आर्थिक बोझ से टूट रहा ट्रांसपोर्ट सेक्टर : डॉ. राजकुमार यादव

"देश की अर्थव्यवस्था ढोने वाले ट्रक चालक आज तेल, टोल और कर्ज के बीच पिस रहे"

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी ने सरकार से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की, कहा— ट्रांसपोर्ट समाज के साथ हो रहा खुला अन्याय

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला / नई दिल्ली : राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी उपसा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने देशभर में ट्रक मालिकों, ट्रक चालकों और ट्रांसपोर्ट व्यवसायियों की बिगड़ती स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि आज ट्रांसपोर्ट सेक्टर अभूतपूर्व संकट के दौर से गुजर रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारों, तेल कंपनियों, बड़ी संस्थाओं और वित्तीय दबावों के बीच ट्रांसपोर्ट समाज लगातार आर्थिक और मानसिक उत्पीड़न झेल रहा है।

डॉ. यादव ने जारी बयान में कहा कि आज डीजल दरों में लगातार वृद्धि होने के बावजूद देश के विभिन्न हिस्सों में लाखों ट्रक सड़क किनारे खड़े रहने को मजबूर हैं, क्योंकि उन्हें पर्याप्त मात्रा में डीजल तक उपलब्ध नहीं हो पा रहा। कई पेट्रोल पंपों और टंकियों में डीजल की आपूर्ति प्रभावित है, जबकि कई स्थानों पर सीमित मात्रा में ही तेल दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यदि डीजल मिल भी रहा है, तो ट्रक चालकों और मालिकों को केवल एक हजार, दो हजार या तीन हजार रुपये तक का ही तेल दिया जा रहा है, जो लंबी दूरी तय करने वाले भारी वाहनों के लिए बिल्कुल अपर्याप्त है।

उन्होंने कहा कि स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि ट्रांसपोर्टर पैसे होने के बावजूद घंटों नहीं, बल्कि दो-दो और तीन-तीन दिनों तक कतारों में इंतजार करने को मजबूर हैं, ताकि उन्हें सौ-दो सौ लीटर डीजल मिल सके। इस कारण मालवाहक वाहन खड़े हो रहे हैं, सप्लाई चेन प्रभावित हो रही है और ट्रांसपोर्ट व्यवसायियों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

डॉ. यादव ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा भार ट्रक चालक

और ट्रांसपोर्टर अपने कंधों पर उठाते हैं। खेतों से अनाज, खदानों से खनिज, फैक्ट्रियों से तैयार माल और बाजारों तक आवश्यक वस्तुएं पहुंचाने का कार्य यही वर्ग करता है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि आज यही वर्ग सबसे अधिक उपेक्षा, असुरक्षा और शोषण का शिकार है।

उन्होंने आरोप लगाया कि डीजल कीमतों में वृद्धि, टोल टैक्स का लगातार बढ़ता बोझ, बीमा कंपनियों की मनमानी, फाइनेंस कंपनियों का दबाव, भारी जुर्माने और प्रशासनिक जटिलताओं ने छोटे और मध्यम ट्रांसपोर्टरों की कमर तोड़ दी है। हजारों वाहन मालिक कर्ज में डूब चुके हैं, जबकि चालक वर्ग असुरक्षित परिस्थितियों में जीवन यापन करने को मजबूर है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि ट्रांसपोर्ट समाज के साथ दोहरा व्यवहार किया जा रहा है। एक ओर सरकारें ट्रांसपोर्ट सेक्टर को देश की आर्थिक रीढ़ बताती हैं, वहीं दूसरी ओर संकट की घड़ी में यही वर्ग सबसे अधिक असहाय छोड़ दिया जाता है। उन्होंने सरकार से मांग की कि डीजल आपूर्ति तत्काल सामान्य की जाए, ट्रांसपोर्टरों के लिए विशेष राहत पैकेज लाया जाए तथा टोल और बीमा नीतियों की समीक्षा कर राहत प्रदान की जाए।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि संगठन किसी भी प्रकार की हिंसा या अव्यवस्था का समर्थन नहीं करता, लेकिन यदि ट्रांसपोर्ट समाज की समस्याओं की लगातार अनदेखी की गई तो देशव्यापी लोकतांत्रिक आंदोलन और जनजागरण अभियान चलाया जाएगा।

डॉ. यादव ने कहा, "यह संघर्ष किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि उस व्यवस्था के खिलाफ है जिसने ट्रांसपोर्ट समाज को केवल राजस्व कमाने का माध्यम समझ लिया है। देश को चलाने वाले पहियों की आवाज अब दबाई नहीं जा सकती। ट्रांसपोर्ट समाज को सम्मान, सुरक्षा और न्याय मिलना ही चाहिए।"

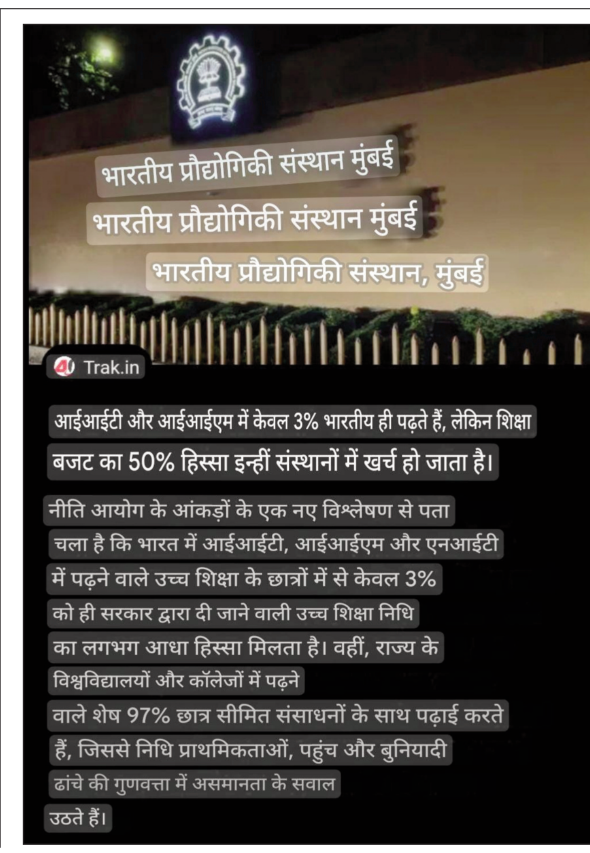

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : "बैंक खाता फ्रीज़ करनाः आर्थिक अधिकार और गरिमा पर आघात"

"आर्थिक पहचान डिजिटल सुरक्षा से अलग नहीं है। बिना विधिक प्रक्रिया के बैंक खाता फ्रीज़ करना केवल वित्तीय कार्रवाई नहीं है—यह जीवन और गरिमा के अधिकार पर सीधा आघात है।"

दिल्ली उच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया है कि बैंक खाता — जो "आर्थिक अस्तित्व का सार" है — उसे बिना एफआईआर या न्यायिक आदेश के फ्रीज़ नहीं किया जा सकता।

यह सिद्धांत को मज़बूत करता है कि खातों का मनमाना फ्रीज़ किया जाना जीवन के अधिकार और आर्थिक गरिमा का उल्लंघन है।

दिल्ली उच्च न्यायालय का निर्णय

न्यायालयः माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय

मामला संख्याः W.P.(C) 7352/2025

निर्णय की तिथिः 04 मई 2026

न्यायाधीशः माननीय न्यायमूर्ति पुरूषेन्द्र कुमार कौरव

मामले के तथ्य

याचिकाकर्ता का बचत खाता HDFC बैंक में था।

08.11.2024 को उन्हें अपने भाई से 87,694 प्राप्त हुए।

16.01.2025 को वडोदरा

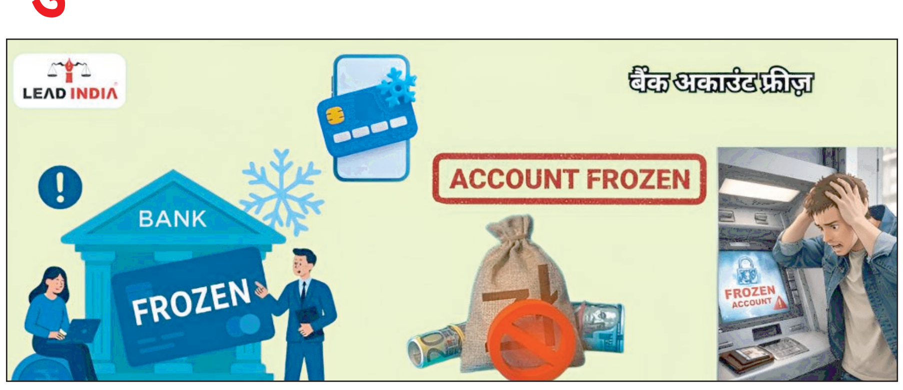

साइबर पुलिस ने बैंक को 41,896.92 की लियन लगाने का निर्देश दिया।

बाद में 22.03.2025 और 18.04.2025 को पूरा खाता शेष राशि फ्रीज़ कर दी गई।

कोई FIR दर्ज नहीं हुई, न ही याचिकाकर्ता को आरोपी या संदिग्ध के रूप में बुलाया गया।

तीस हज़ारी अदालत ने अधिकार क्षेत्र के अभाव में उनकी अर्जी खारिज कर दी।

मुद्दे

क्या बिना FIR, न्यायिक आदेश या नोटिस के बैंक खाता फ्रीज़ किया जा सकता है?

क्या ऐसा फ्रीज़ करना संविधान के अनुच्छेद 19(1)(g) और 21 के तहत अधिकारों का उल्लंघन है?

तर्क

याचिकाकर्ताः बिना FIR या कोर्ट आदेश के फ्रीज़ करना मनमाना है, जीवनयापन और गरिमा के अधिकार का उल्लंघन है।

बैंकः फ्रीज़ केवल गुजरात साइबर पुलिस की शिकायत पर आधारित था।

साइबर पुलिसः कोई जवाब दाखिल नहीं किया, कोई औचित्य नहीं दिया।

न्यायालय की टिप्पणियाँ

FIR, आरोप या न्यायिक आदेश के बिना फ्रीज़ करना मनमाना और असंवैधानिक है।

बैंक खाता व्यक्ति के आर्थिक अस्तित्व का सार है; बिना विधिक प्रक्रिया के फ्रीज़ करना जीवन के अधिकार में बाधा है।

Malabar Gold and Diamond Ltd. v. Union of India (2026) का हवाला दिया गया—मनमाना फ्रीज़ मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है।

सिसरो का उद्धरणः "निर्दोष होने पर भी संदेह से मुक्त नहीं।"

निर्णय

HDFC बैंक को तुरंत याचिकाकर्ता का खाता डिफ्रीज़ करने का निर्देश।

याचिकाकर्ता को किसी भी वैध जांच में सहयोग करना होगा।

याचिका निस्तारित।

साइबर सुरक्षा के लिए महत्व

बैंक खाते डिजिटल संपत्ति हैंः आज के साइबर युग में खाते केवल धन नहीं, बल्कि पहचान, पहुँच और अस्तित्व का प्रतीक हैं।

विधिक प्रक्रिया का पालनः साइबर अपराध जांच में संवैधानिक अधिकारों का संतुलन आवश्यक है।

साइबर धोखाधड़ी बनाम कानूनी सुरक्षाः पुलिस को त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए, लेकिन FIR और न्यायिक आदेश जैसे सुरक्षा उपाय दुरुपयोग रोकते हैं।

जन-जागरूकताः नागरिकों को अपने अधिकार जानने चाहिए—बिना औपचारिक आरोप या न्यायिक आदेश के कोई खाता फ्रीज़ नहीं किया जा सकता।

यह निर्णय डिजिटल युग में वित्तीय अधिकारों को मज़बूत करता है। साइबर सुरक्षा अभियानों के लिए स्पष्ट संदेश है—नागरिकों को धोखाधड़ी से बचाना उतना ही आवश्यक है जितना उनके संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करना।

विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर : तनावपूर्ण जीवनशैली, जंक फूड और बढ़ता रक्तचाप

डॉ रूप कुमार बनर्जी
होम्योपैथिक चिकित्सक

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अधिकांश लोग मानसिक तनाव, अनियमित दिनचर्या, देर रात तक जागना, मोबाइल-लैपटॉप का अत्यधिक उपयोग, बाहर का तला-भुना भोजन, फास्ट फूड, जंक फूड और शारीरिक निष्क्रियता जैसी आदतों के शिकार हो चुके हैं। परिणामस्वरूप उच्च रक्तचाप तेजी से एक "साइलेंट किलर" के रूप में उभर रहा है।पहले तो यह समस्या केवल वृद्धावस्था में दिखाई देती थी, लेकिन अब युवा वर्ग भी इसके प्रभाव में आ रहा है। उच्च रक्तचाप धीरे-धीरे हृदय, मस्तिष्क, किडनी और आंखों को नुकसान पहुँचाता है। यदि समय रहते ध्यान न दिया जाए तो हार्ट अटैक, स्ट्रोक, किडनी फेल्योर जैसी गंभीर स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

रक्तचाप बढ़ने के प्रमुख कारणों के बारे में जान लेते हैं :-

1. अत्यधिक नमक :- फास्ट फूड, चिप्स, पिज्जा, बर्गर, नमकीन, पैकेट वाले खाद्य पदार्थों में सोडियम की मात्रा बहुत अधिक होती है।

अत्यधिक नमक शरीर में पानी रोकता है, जिससे रक्तचाप बढ़ता है।

2. तनाव और चिंता :- कम समय में ज्यादा कुछ पा लेने की चाहत की वजह से लगातार मानसिक तनाव, क्रोध, भय, प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव और पारिवारिक तनाव शरीर में तनाव हार्मोन बढ़ाते हैं, जिससे हृदय की धड़कन और रक्तचाप बढ़ जाता है।

3. जंक फूड और तैलीय भोजन :- बार-बार बाहर का तला-भुना भोजन खाने से शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है, धमनियाँ संकरी होने लगती हैं और रक्त का प्रवाह बाधित होता है।

4. मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता :- दिनभर बैठे रहना, व्यायाम न करना, मोटापा बढ़ना, ये सभी हृदय पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं।

5. धूम्रपान और शराब :- निकोटीन और अल्कोहल रक्त वाहिनियों को संकुचित करते हैं, जिससे रक्तचाप तेजी से बढ़ सकता है।

6. अपर्याप्त नींद :- रात में कम सोना, देर रात तक मोबाइल चलाना और अनियमित नींद भी उच्च रक्तचाप का महत्वपूर्ण कारण है।

7. मधुमेह और किडनी रोग :- डायबिटीज तथा किडनी की खराबी रक्तचाप को नियंत्रित करने वाली प्रणाली को प्रभावित करती है।

उच्च रक्तचाप के सामान्य लक्षण :-

सिरदर्द , चक्कर आना , घबराहट , थकान , नींद न आना , सीने में भारीपन , सांस फूलना ,

चिड़चिड़ापन , कानों में आवाज आना ।

ध्यान दें — कई लोगों में कोई स्पष्ट लक्षण नहीं होते, इसलिए नियमित BP जांच अत्यंत आवश्यक है।

रक्तचाप को नियंत्रित करने के प्राकृतिक उपाय :-

1. नमक सीमित करें :- प्रतिदिन कम नमक का सेवन करें।अचार, पापड़, पैकेट स्नैक्स और प्रोसेस्ड फूड कम लें।

2. हल्के नमक में बना घर का ताजा भोजन अपनाएँ :- हरी सब्जियाँ, सलाद, फल, अंकुरित अनाज, दलिया, ओट्स और फाइबरयुक्त भोजन लें।

3. नियमित व्यायाम करें :- सप्ताह में काम से कम 5 दिन कम से कम 30–45 मिनट तक तेज चाल से चलना, योग, प्राणायाम और हल्का व्यायाम करें।

4. तनाव कम करें :- ध्यान, मेडिटेशन, संगीत, सकारात्मक सोच और प्रकृति के साथ समय बिताना लाभदायक है।

5. पर्याप्त नींद लें :- रोजाना 7–8 घंटे की शांत और गहरी नींद लें। इस समय मोबाइल बिल्कुल बंद कर दें।

6. धूम्रपान और शराब से दूरी :- ये दोनों उच्च रक्तचाप और हृदय रोग के बड़े कारण हैं।

7.

रक्तचाप नियंत्रित करने वाले उपयोगी आहार :-

उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में लहसुन,टमाटर, केला,नारियल पानी,चुकंदर,लौकी का रस,ओट्स,मेथी, अलसी आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं परंतु किसी चिकित्सक की सलाह लेकर ही इन्हें लिया जा सकता है।

किनसे बचें :-

✓ अत्यधिक चाय-कॉफी
✓ कोल्ड ड्रिंक
✓ फास्ट फूड
✓ डिब्बाबंद भोजन
✓ अधिक चीनी एवं मैदा ।

होम्योपैथिक दृष्टिकोण :- होम्योपैथी केवल रक्तचाप की संख्या कम करने पर नहीं, बल्कि व्यक्ति की संपूर्ण शारीरिक-मानसिक अवस्था को संतुलित करने पर कार्य करती है।यह तनाव, चिंता, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, मोटापा और पाचन संबंधी समस्याओं को समझकर व्यक्ति की प्रकृति अनुसार औषधि चयन करती है।

स्वयं दवा लेने के बजाय किसी अनुभवी होम्योपैथिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें।

दैनिक जीवन में अपनाने योग्य स्वास्थ्य नियम :-

✓ सुबह जल्दी उठें
✓ प्रतिदिन थोड़ा हल्का-फुल्का टहलें
✓ भोजन समय पर करें
✓ क्रोध और तनाव कम करें
✓ पानी पर्याप्त मात्रा में पिएँ
✓ नियमित BP जांच कराते रहें
✓ हँसने और सकारात्मक रहने की आदत डालें

"स्वास्थ्य केवल दवाओं से नहीं, बल्कि संतुलित जीवनशैली, शांत मन, संयमित भोजन और नियमित दिनचर्या से सुरक्षित रहता है।"यदि हम आज अपनी आदतों को सुधार लें, तो आने वाले वर्षों में अनेक गंभीर बीमारियों से स्वयं को बचा सकते हैं।

प्रस्तुतकर्ता – विनय कुमार मिश्र

मैग्नीशियम स्लीप स्मूदी

यह एक शांत करने वाली मैग्नीशियम-रिच बेडटाइम स्मूदी है जो बेहतर नींद, मसल्स को आराम, नसों को शांत करने और रात में नैचुरली ठीक होने में मदद कर सकती है।

मैग्नीशियम स्लीप स्मूदी*

सामग्री

1 छोटा केला
1 कप गर्म या रूम-टेम्परेचर वाला बादाम का दूध
1 बड़ा चम्मच कद्दू के बीज
1 छोटा चम्मच बिना मीठा कोको पाउडर
2 भीगे हुए बादाम
1 छोटा खजूर (मीठेपन के लिए ऑप्शनल)
एक चुटकी दालचीनी
एक छोटी चुटकी जायफल (बहुत कम)

ऑप्शनल:
1 छोटा चम्मच ओट्स
½ छोटा चम्मच शहद
1 छोटा चम्मच चिया सीड्स

यह क्यों मदद करता है
केला → इसमें मैग्नीशियम + पोटैशियम होता है
कद्दू के बीज → सबसे रिच नैचुरल मैग्नीशियम फूड्स में से एक
बादाम → शांत करने वाले हेल्दी फैट + मैग्नीशियम
कोको → मैग्नीशियम + मूड रिलैक्सेशन
दालचीनी और जायफल → गर्माहट देने वाला, आराम देने वाला असर

कैसे बनाएं

सब कुछ स्मूद होने तक ब्लेंड करें।
सोने से 30–60 मिनट पहले पिएं।

आप इसे ऐसे ले सकते हैं:
सर्दियों में हल्का गर्म
गर्मियों में ठंडा/हल्का ठंडा

नींद के ज़रूरी टिप्स

बेहतर नतीजों के लिए:
रात 9 बजे के बाद भारी खाना खाने से बचें
रात में मोबाइल स्क्रीन की ब्राइटनेस कम करें
कमरे को थोड़ा ठंडा रखें
शाम के बाद स्ट्रॉन्ग चाय/कॉफी पीने से बचें

स्ट्रॉन्ग वर्शन (गहरे आराम के लिए)
अगर आपको ठीक लगे, तो आप ये भी मिला सकते हैं:
1 tsp खसखस
या दूध में भीगे हुए केसर के 2 रेशे
*अगर आपको किडनी की बीमारी है तो न लें
कोको से बहुत ज़्यादा एसिडिटी
नट एलर्जी
अनकंट्रोल्ड डायबिटीज (तो खजूर/शहद न लें)

आयुर्वेदिक टच

एक बहुत ही पारंपरिक भारतीय नींद को सपोर्ट करने वाला कॉम्बो:
गर्म दूध + जायफल + थोड़ा घी + चुटकी भर हल्दी
इसे अक्सर सोने से पहले आराम देने वाला और शांत करने वाला माना जाता है।

बेहतर नींद के लिए मैग्नीशियम युक्त बेडटाइम स्मूदी

अगर रात में नींद पूरी नहीं होती या बार-बार टूटती है, तो यह आसान स्मूदी मदद कर सकती है।

मैग्नीशियम क्यों ज़रूरी है
नर्वस सिस्टम को शांत करता है
मांसपेशियों को आराम देता है
नींद के हार्मोन (मेलाटोनिन) को सपोर्ट करता है
तनाव और बेचैनी कम करता है

यह स्मूदी कैसे मदद करती है
प्राकृतिक मैग्नीशियम-समृद्ध तत्व
नींद की गुणवत्ता बेहतर बनाती है
रात की बेचैनी व बार-बार जागने में सहायक
बिना दवा, प्राकृतिक उपाय

कब लें
सोने से 30–60 मिनट पहले
हल्की, आसानी से पचने वाली

किसके लिए फायदेमंद
अनिद्रा, तनाव, पैरों में ऐंठन वाले लोग
बुजुर्ग व मैग्नीशियम की कमी वाले
जो नेचुरल स्लीप सपोर्ट चाहते हैं

निष्कर्ष:
मैग्नीशियम-युक्त स्मूदी एक सरल, सुरक्षित और वैज्ञानिक तरीका है अच्छी और गहरी नींद के लिए।

क्या आम सच में डायबिटीज के लिए अच्छा है?

डायबिटीज में आम खाना चाहिए या नहीं, यह एक आम दुविधा है। आसान शब्दों में कहें तो, डायबिटीज वाला व्यक्ति कुछ लिमिट में और सावधानी से आम खा सकता है।

आम में नैचुरल शुगर (फ्रुक्टोज) ज़्यादा होती है, लेकिन इसमें फाइबर और विटामिन भी होते हैं।

एक मीडियम साइज़ के आम (लगभग 200 से 250 ग्राम वज़न) में लगभग 150 से 200 कैलोरी होती हैं।

आम में न्यूट्रिएंट्स का ब्रेकडाउन लगभग इस तरह होता है:
कार्बोहाइड्रेट: 35-50 ग्राम (ज़्यादातर नैचुरल शुगर)
फाइबर: 3-5 ग्राम
प्रोटीन: 1-1.5 ग्राम
फैट: ज़ीरो (0.6 ग्राम)

अगर आम बड़ा है (जैसे केसर या राजापुरी), तो उसका वज़न 400-500 ग्राम तक हो सकता है, जिसमें कैलोरी की मात्रा 300 से 350 तक बढ़ सकती है।

अगर आप आम का जूस निकालकर पीते हैं, तो एक कटोरी जूस में ज़्यादा कैलोरी होती है क्योंकि फाइबर कम हो जाता है और आम की मात्रा बढ़ जाती है।

कैलोरी के साथ-साथ, आम में विटामिन C और विटामिन A भी अच्छी मात्रा में होता है, जो इम्यून सिस्टम के लिए फायदेमंद होते हैं।

जब डायबिटीज में आम खाने की बात आती है, तो इसकी मात्रा और समय सबसे ज़रूरी चीज़ें हैं।

आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI) लगभग 51 से 56 होता है, जो मीडियम रेंज में है। दिन भर में जितने चाहें उतने आम खाने के बजाय, आपको दिन में आधा कप या आम का एक छोटा टुकड़ा खाना चाहिए। एक बार में बहुत ज़्यादा आम खाने से ब्लड शुगर अचानक बढ़ सकता है।

जूस पीने के बजाय आम को टुकड़ों में खाना बेहतर है। जूस बनाने से इसमें मौजूद फाइबर कम हो जाता है, जिससे शुगर खून में तेज़ी से घुलती है।

आमतौर पर हम खाने के साथ आम का जूस लेते हैं, जिससे शुगर लेवल बहुत बढ़ सकता है। आम को 'स्नैक' के तौर पर अलग से खाना चाहिए। अगर हम खाने के साथ आम खाते हैं, तो खाने की कैलोरी और आम की कैलोरी बहुत बढ़ सकती है।

अगर आप कुछ आम खाते हैं, तो उसके साथ मुट्ठी भर बादाम या अखरोट लेने से शुगर का एब्ज़ॉर्प्शन धीमा हो जाता है।

आपको रात को सोने से पहले आम खाने से बचना चाहिए। इन्हें सुबह या लंच के समय खाना बेहतर है।

आम खाने के दो घंटे बाद आपको ग्लूकोमीटर से अपना शुगर लेवल चेक करना चाहिए, ताकि आपको पता चले कि यह आपके शरीर पर कैसे असर डालता है। अगर आपका ब्लड शुगर लेवल पहले से ही बहुत ज़्यादा है, यानी आपको अनकंट्रोल्ड डायबिटीज़ है, तो आपको डॉक्टर से पूछे बिना आम नहीं खाना चाहिए।

इस तरह, डायबिटीज़ में आम ₹बैन₹ नहीं है, बल्कि इसे ₹कंट्रोल₹ करना चाहिए। अगर आप दिन में कार्बोहाइड्रेट (रोटी या चावल) की मात्रा थोड़ी कम कर दें, तो आप स्वाद के लिए आम का एक टुकड़ा खा सकते हैं, लेकिन हाँ, मिल्क शेक जैसी चीज़ों से हर कीमत पर बचना चाहिए।

जब तक आप इस तरह एक या दो टुकड़े खाते हैं, तब तक कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन अगर आप कटोरे-कटोरे खाते हैं, तो आपको झटका लगना तय है!

यही बात सेब और केले पर भी लागू होती है। इन फलों में फ्री शुगर होती है जो सीधे ब्लड शुगर बढ़ाती है।

यहाँ एक बात साफ़ कर दें कि डायबिटीज़ की दवा या इंसुलिन इंजेक्शन लेने वाले बहुत से लोग सोचते हैं कि इसकी वजह से वे जो चाहें खा सकते हैं, लेकिन ऐसी समझ एक गंभीर और जानलेवा गलती है। आप जो भी दवा लें, दवा सख्त डाइट का विकल्प नहीं है।

इस मौसम में खाते समय साथ वाली तस्वीर दीवार पर लगाना ज़रूरी होगा!

डॉ. प्रणव वैद्य

विसरल फैट, अंगों के चारों ओर लिपट जाती है, और सबसे खतरनाक

विसरल फैट से निपटने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं:

1. डाइट: साबुत खाने, फल, सब्जियां, साबुत अनाज, लीन प्रोटीन और हेल्दी फैट पर ध्यान दें। मीठे ड्रिंक्स और प्रोसेस्ड फूड कम करें।

2. एक्सरसाइज: इसे कार्डियो (तेज चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना), स्ट्रेंथ ट्रेनिंग और हाई-इंटेंसिटी इंटरवल ट्रेनिंग (HIIT) के साथ मिलाएं।

3. स्ट्रेस मैनेजमेंट: योग, मेडिटेशन या गहरी सांस लेने की एक्सरसाइज कोर्टिसोल लेवल को कम करने में मदद कर सकती हैं।

4. नींद: भूख वाले हॉर्मोन को कंट्रोल करने के लिए हर रात 7-8 घंटे सोने का लक्ष्य रखें।

5. प्रोबायोटिक्स: प्रोबायोटिक से भरपूर खाने की चीज़ों या सप्लीमेंट्स से पेट की सेहत का ध्यान रखें।

6. शराब कम पिएं: ज़्यादा शराब पीने से आंतों में फैट जमा हो सकता है।

7. हाइड्रेटेड रहें: दिन भर खूब पानी

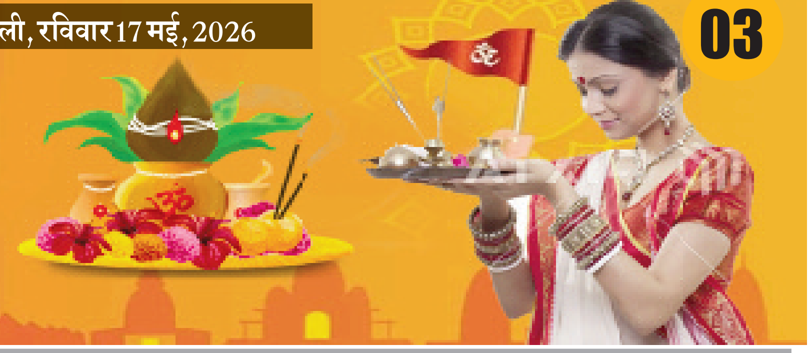

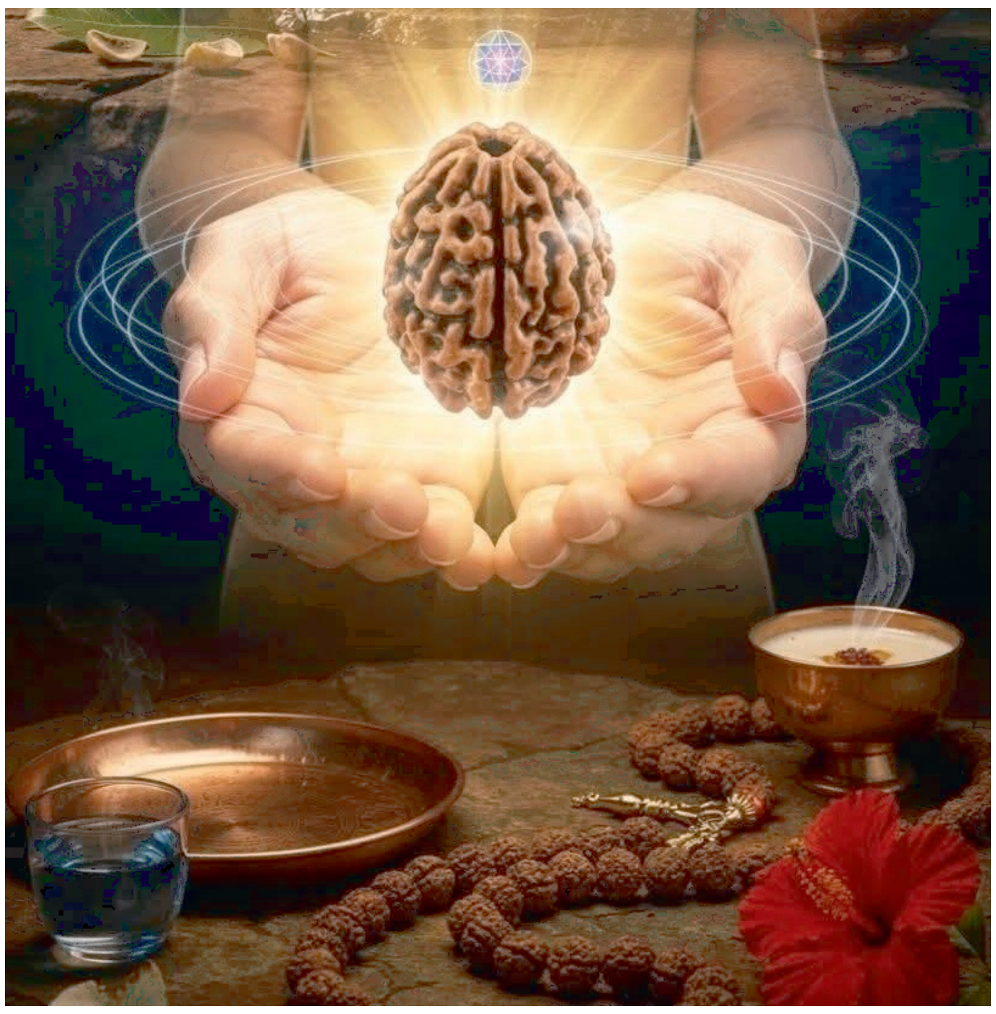

“रुद्रस्य नेत्राद् यद् अश्रु प्रपतितं महीतले, तद् रुद्राक्ष इति ख्यातं”

पिंकी कुंडू

शिवपुराण कहता है: शिव के नेत्र से जो आँसू धरती पर गिरे, वही रुद्राक्ष बना, इसलिए ये सिर्फ बीज नहीं, महादेव की ऊर्जा का 'लाइव वायर' है।

गलत तरीके से पहना तो 'शॉर्ट सर्किट'। सही विधि से पहना तो जीवन बदल जाए।

रुद्राक्ष धारण विधि:

शिव का आँसू पहनने का सम्पूर्ण विज्ञान

खंड 1: रुद्राक्ष धारण से पहले - 4 स्टेप की तैयारी

1. कौन सा रुद्राक्ष आपके लिए? मुखी के अनुसार

सबसे सेफ कॉम्बो: 5 मुखी + 7 मुखी + गौरीशंकर। हर कोई पहन सकता है।

असली-नकली चेक:

पानी में डूबे = असली।

2 तांबे के सिक्कों के बीच रखो, हल्का घूमे = असली।

X-Ray में बीज दिखे = असली।

2. शुभ दिन और मुहूर्त

श्रेष्ठ दिन: सोमवार, शिवरात्रि, श्रावण मास, प्रदोष, रवि पुष्य योग, गुरु पुष्य योग।

श्रेष्ठ समय: ब्रह्म मुहूर्त 4-6 AM, या शिव का समय प्रदोष 6-8 PM।

वर्जित: ग्रहण, अमावस्या की रात, सूतक, रजस्वला समय।

3. रुद्राक्ष का संस्कार: शुद्धिकरण + प्राण प्रतिष्ठा

बिना संस्कार रुद्राक्ष 'सोया हुआ' है। 5 स्टेप:

स्टेप 1: शुद्धि

कच्चा दूध + गंगाजल + शहद + घी + दही = पंचामृत। रुद्राक्ष को 30 मिनट डुबोओ। फिर साफ गंगाजल से धो।

विज्ञान: पंचामृत से pH बैलेंस, बैक्टीरिया साफ। रुद्राक्ष के छिद्र खुलते हैं।

स्टेप 2: अभिषेक

शिवलिंग पर रखो। ₹ॐ नमः शिवाय₹ से 108 बार जल चढ़ाओ।

भाव: माँ के आँसू को पिता के चरणों में। चार्जिंग शुरू।

स्टेप 3: मंत्र जागरण

जिस मुखी का है उसका मंत्र 108 बार:

1 मुखी: ॐ ह्रीं नमः
2 मुखी: ॐ नमः
3 मुखी: ॐ क्लीं नमः
4 मुखी: ॐ ह्रीं नमः
5 मुखी: ॐ ह्रीं नमः
6 मुखी: ॐ ह्रीं हुं नमः
7 मुखी: ॐ हुं नमः
8 मुखी: ॐ हुं नमः
9 मुखी: ॐ ह्रीं हुं नमः
10 मुखी: ॐ ह्रीं नमः

सार्वभौम मंत्र: “ॐ नमः शिवाय₹ या “ॐ ह्रीं नमः” - सभी के लिए।

स्टेप 4: धूप-दीप

गुगुल + चंदन की धूप दिखाओ। घी का दीपक। “ॐ त्र्यम्बकं यजामहे₹ बोलो।

विज्ञान: यूजेनॉल से नेगेटिव आयन चार्ज।

स्टेप 5: प्राण प्रतिष्ठा

हाथ में रखकर आँख बंद: ₹हे रुद्राक्ष, तुम साक्षातशिव हो। मेरे कंठ में विराजो। मेरी रक्षा करो, धर्म में लगाओ। जब तक मैं धारण करूँ, चैतन्य रहो।”

3 बार फूँक मारो। अब ये 'जागृत' है।

4. धागा/माला कैसे पिरोएँ

धागा: लाल धागा, रेशम, चाँदी, सोना, पंचधातु। काला धागा कभी नहीं - शनि का।

गाँठ: हर रुद्राक्ष के बाद गाँठ। ताकि आपस में न टकराएँ। टकराने से ऊर्जा कटती है।

मेरु: माला में 1 बड़ा दाना 'मेरु'। उसे लाँघना नहीं। 108+1 = 109 दाने।

गले में संख्या: 1, 3, 5, 7, 9, 27, 54, 108। सम संख्या वर्जित।

खंड 2: धारण करने की विधि - Minute to Minute

स्नान: सूर्योदय से पहले, सिर धोकर। बिना साबुन। सेंधा नमक पानी में।

शुद्ध वस्त्र: सफेद या लाल। बिना सिला बेहतर।

आसन: ऊनी आसन, पूर्व या उत्तर मुख।

संकल्प: हाथ में जल: ₹मम सर्वपापक्षयपूर्वक आयुरारोग्यैश्वर्य अभिवृद्ध्यर्थं रुद्राक्षधारणं करिष्ये”।

मंत्र: 108 बार ₹ॐ नमः शिवाय₹ या बीज मंत्र। हर मंत्र पर रुद्राक्ष को हृदय से लगाओ।

धारण: “ॐ ह्रीं नमः शिवाय” बोलकर गले में पहनो। या दाहिने हाथ में - पुरुष दाहिना, स्त्री बायाँ।

शीश नवाओ: शिव को मन में प्रणाम। “त्वं मातृरूपेण रक्ष मां”।

पहला भोग: मीठा - मिश्री, शहद, लड्डू। रुद्राक्ष को भी लगाओ, फिर खुद खाओ।

पहले 40 दिन: रोज सुबह 11 बार “ॐ नमः शिवाय” बोलकर रुद्राक्ष को छुओ। दोस्ती बनाओ।

खंड 3: धारण के 21 नियम - क्या करें, क्या न करें

करें: 11 नियम

स्नान करके पहनें: सोते समय उतार दो, सुबह नहाकर पहनो। सोते समय नेगेटिव ऊर्जा खींचता है।

शिव को अर्पण: महीने में 1 बार सोमवार को शिवलिंग पर रखकर जल चढ़ाओ। रिचार्ज।

एकांत जाप: रोज 11 बार “ॐ नमः शिवाय” रुद्राक्ष पकड़कर। कनेक्शन।

तुलसी सेवा: रुद्राक्ष + तुलसी = विष्णु + शिव। बैलेंस।

दान: धारण के बाद गरीब को भोजन। अहंकार कटे।

शिवरात्रि जागरण: साल में 1 बार। फुल चार्ज।

बेल पत्र: सोमवार को बेल पत्र शिव को, फिर उसी हाथ से रुद्राक्ष छुओ।

कपड़े: अलग डिब्बी में रखो। दूसरों के कपड़े से न छुए।

बीमारी में: महामृत्युंजय जाप करते समय पहनो। हीलिंग 10 गुना।

यात्रा में: जरूर पहनो। 10 दिशा रक्षा।

मृत्यु के समय: उतार दो। दूसरे को मत दो। प्रवाहित कर दो।

न करें: 10 वर्जनाएँ

मांस-मदिरा-लहसुन-प्याज: रुद्राक्ष तामसिक भोजन से 'सो' जाता है। 48 घंटे असर खत्म। पहनकर खाओगे तो उल्टी, सिरदर्द।

श्मशान: श्मशान, सूतक घर, प्रसूति घर में मत जाओ। या जाओ तो उतार दो। नेगेटिव खींच लेगा।

शौच-बाथरूम: उतार दो। अपवित्रता से ऊर्जा लीक।

शारीरिक संबंध: उतार दो। वीर्य = ओज। ओज और शिव ऊर्जा टकराती है।

झूठ-गाली-हिंसा: रुद्राक्ष 'सत्य का मीटर'। झूठ बोलोगे तो गला जकड़ेगा।

दूसरे को देना: अपना रुद्राक्ष किसी को न दो, न किसी का पहनो। DNA कनेक्शन है।

टूटा-फूटा: खंडित रुद्राक्ष तुरंत नदी में। पहनना = दुर्भाग्य।

सोना-चाँदी के साथ: अगर रुद्राक्ष + सोने की चेन है तो रुद्राक्ष त्वचा से सटे। धातु बीच में न हो।

साबुन-केमिकल: नहाते समय उतारो। साबुन से छिद्र बंद।

अहंकार: ₹मैंने रुद्राक्ष पहना है₹ - बोलते ही पावर 50% डाउन। गुप्त रखो।

खंड 4: विशेष परिस्थिति

1. बच्चे पहनें?

हाँ, 8 साल के बाद। 6 मुखी या 4 मुखी। धागे में, छोटा साइज। रात को उतार दो। पढ़ाई में फोकस।

2. महिलाएँ पहनें?

हाँ, बिल्कुल। शिव-शक्ति में भेद नहीं। रजस्वला के 5 दिन उतार दें। फिर गंगाजल छिड़ककर पहनें।

3. नहाते समय?

उतार दो। सादे पानी से धो सकते हो, साबुन नहीं।

4. ऑपरेशन/बीमारी:

डॉक्टर मना करे तो उतार दो। ठीक होने पर फिर संस्कार करके पहनो।

5. खो जाए/टूट जाए:

घबराओ मत। ₹ॐ नमः शिवाय₹ 108 बार। शिव को कहो ₹गलती माफ₹। नया लो, फिर संस्कार।

खंड 5: रुद्राक्ष का वैज्ञानिक चमत्कार

इलेक्ट्रोमैग्नेटिक: रुद्राक्ष में 26% कार्बन, 30% हाइड्रोजन, 0.95% नाइट्रोजन। डाइइलेक्ट्रिक है। हृदय के पास पहनने से HRV सुधरती है - BHU रिसर्च।

एंटी-बैक्टीरियल: छिद्रों में 'इंडक्शन'। पसीना सोखता है, बैक्टीरिया मारता है।

ब्लड प्रेशर: 5 मुखी से वेगस नर्व एक्टिव। BP 10 mmHg डाउन - AIIMS 2019।

न्यूरो: 4 मुखी से अल्फा वेव बढ़े। मेमोरी 18% तेज - NIMHANS।

कॉस्मिक एनर्जी: रुद्राक्ष 'कैपेसिटर'। ब्रह्मांडीय ऊर्जा स्टोर करके शरीर को देता है।

उपसंहार: रुद्राक्ष एक जिम्मेदारी है

रुद्राक्ष पहनना मतलब शिव का गण बनना। गण मतलब 'अनुशासित'।

झूठ नहीं,
मांस नहीं,
क्रोध नहीं,
वासना नहीं।

अगर ये नहीं कर सकते तो मत पहनो। खाली फैशन में पहना तो शिव नाराज।

पर अगर सच्चे मन से पहनो, नियम से रहो, तो रुद्राक्ष तुम्हारा बॉडीगार्ड, डॉक्टर, गुरु, सब बन जाएगा।

अंतिम मंत्र:

रुद्राक्षं कण्ठदेशे तु धारयेत्यस्तु मानवः।
तस्य नश्यन्ति पापानि जन्मकोटिशतानि च॥

जो कंठ में रुद्राक्ष धारण करता है, उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट।

धारण मंत्र:

ॐ नमः शिवाय। ॐ ह्रीं नमः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्॥

आज का राशिफल

मिस सपाम चानू प्रेमा
ज्योतिष-अंकशास्त्री, इंफाल, मणिपुर।
संपर्क नंबर: 9366411415, ईमेल: chanuprema39@gmail.com

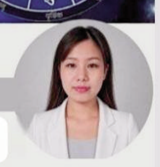

आज का राशिफल (17/05/2026) –सपम चानू प्रेमा (खगोल–अंकशास्त्री)

मेष
आप कुछ बेचैन महसूस कर सकते हैं और प्रियजनों के साथ गलतफहमियां होने की संभावना है। आपको कुछ आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। आपके परिवार के सदस्यों को भी इस समय स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

वृषभ
अपने किसी भाई, बहन या रिश्तेदार से संपर्क करने के लिए समय निकालें जिनसे आप अक्सर बात नहीं करते। आपको चर्चा करने के लिए बहुत कुछ मिलेगा, जिसमें कुछ आश्चर्यजनक बातें भी शामिल होंगी। आज आपको शुभ परिणाम मिल सकते हैं। इस समय आपकी संपत्ति में वृद्धि हो सकती है।

मिथुन
यात्रा की व्यवस्था में देरी होने की संभावना है। समय कम होने के कारण आपको अपनी योजनाओं में बदलाव करना पड़ सकता है। इस समय आपकी मानसिक क्षमता प्रभावित हो सकती है। काम में कुछ बाधाएँ आ सकती हैं।

कर्क
आपको काफी थकान महसूस होने की संभावना है, और किसी भी प्रकार के परिश्रम का विचार आपको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। आपको अनेक लाभ प्राप्त होंगे और आपका मन प्रसन्न रहेगा। लंबित कार्य सुचारू रूप से संपन्न होने लगेंगे।

सिंह
अपनों से जुड़े मामलों को सुलझाने में अधिक दृढ़ रवैया चमत्कारिक साबित हो सकता है। आज का दिन आपके लिए प्रसिद्धि और व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए शुभ है। आप मेहनती और ऊर्जावान महसूस कर सकते हैं।

कन्या
एक नई स्वास्थ्य दिनचर्या आपके स्वास्थ्य में अद्भुत सुधार ला सकती है। अपनों से यथासंभव बहस करने से बचें। आज का दिन शायद कम भाग्यशाली रहे और कार्यक्षेत्र में गंभीर बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

तुला
आने वाले महीनों में अपने प्रयासों में हासिल की गई प्रगति को आगे बढ़ाने का संकल्प लें। आपको स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और कुछ मानसिक तनाव भी हो सकता है।

वृश्चिक
आज के दिन के लिए सावधानी बरतना बुद्धिमानी होगी। परिवार के साथ घूमने जाना अधिक सफल रहेगा। आप भाग्यशाली हो सकते हैं और आपकी खुशी बढ़ सकती है। आपको अपने काम में सफलता मिलेगी।

धनु
इस समय आप कोई निश्चित योजना या प्रतिबद्धता बनाने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं। आप अपने प्रयासों और कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। आपके खर्च सीमित रहेंगे और बचत में वृद्धि होगी।

मकर
आत्मसंदेह को हावी होने दें, वरना पूरा दिन खराब हो सकता है। भविष्य की योजनाओं को सुदृढ़ करने से आपको अधिक सुरक्षित महसूस करने में मदद मिलेगी। आपको कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कड़ी मेहनत करें और आलस्य को त्याग दें।

कुंभ
कुछ ऐसे धन हो सकते हैं जिन पर आपका ध्यान न गया हो, लेकिन वे अत्यंत उपयोगी साबित हो सकते हैं। आज आपकी मानसिक क्षमता प्रभावित हो सकती है। साथ ही, आपको कार्यस्थल पर कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

मीन
आपके जीवन में रोमांस का समय आ सकता है। आज का दिन गंभीरता से काम करने के लिए शुभ हो सकता है। आपको अपने दोस्तों, परिवार या रिश्तेदारों से सहयोग मिल सकता है। इस समय आप ऊर्जावान और साहसी महसूस कर सकते हैं, इसलिए कड़ी मेहनत करें।

जीवों को सभी कर्मों का फल देते हैं शनि देव

शनि जयंती एक हिंदू पर्व है जो ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष, अमावस्या को मनाया जाता है। माना जाता है कि इस दिन शनि देव का जन्म हुआ था। शनि देव हिंदू धर्म में पूजे जाने वाले प्रमुख देवताओं में से एक हैं।

शनि जन्म कथा

शनि जन्म के संदर्भ में एक पौराणिक कथा बहुत मान्य है जिसके अनुसार शनि, सूर्य देव और उनकी पत्नी छाया के पुत्र हैं। सूर्य देव का विवाह प्रजापति दक्ष की पुत्री संज्ञा से हुआ। कुछ समय पश्चात उन्हें तीन संतानों के रूप में मनु, यम और यमुना की प्राप्ति हुई। इस प्रकार कुछ समय तो संज्ञा ने सूर्य के साथ निर्वाह किया, परंतु संज्ञा सूर्य के तेज को अधिक समय तक सहन नहीं कर पाईं, उनके लिए सूर्य का तेज सहन कर पाना मुश्किल होता जा रहा था। इसी वजह से संज्ञा अपनी छाया को पति सूर्य की सेवा में छोडक़र वहां से चली गईं। कुछ समय बाद छाया के गर्भ से शनि देव का जन्म हुआ।

शनि जयंती पूजा

शनि जयंती के अवसर पर शनि देव के निमित्त विधि-विधान से पूजा-पाठ तथा व्रत किया जाता है। शनि जयंती के दिन किया गया दान-पुण्य एवं पूजा-पाठ शनि संबंधी सभी कष्ट दूर कर देने में सहायक होता है। शनि देव के निमित्त पूजा करने हेतु भक्त को चाहिए कि वह शनि जयंती के दिन सुबह जल्दी स्नान आदि से निवृत्त होकर, नवग्रहों को नमस्कार करते हुए शनि देव की लोहे की मूर्ति स्थापित करे और उसे सरसों या तिल के तेल से स्नान कराए तथा षोड्शोपचार पूजन करे, साथ ही शनि मंत्र का उच्चारण करे-ओउम शनिश्चराय नमः।

इसके बाद पूजा सामग्री सहित शनि देव से संबंधित वस्तुओं का दान करे। इस प्रकार पूजन के बाद दिन भर निराहार रहें व मंत्र का जप करें। शनि की कृपा एवं शांति प्राप्ति हेतु तिल, उड़द, काली मिर्च, मूंगफली का तेल, आचार, लौंग, तेजपत्ता तथा काले नमक का उपयोग करना चाहिए। शनि देव को प्रसन्न करने के लिए हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। शनि के लिए दान में दी जाने वाली वस्तुओं में काले कपड़े, जामुन, काली उड़द, काले जूते, तिल, लोहा, तेल आदि वस्तुओं को शनि के निमित्त दान में दे सकते हैं।

शनि जयंती का महत्व

इस दिन प्रमुख शनि मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। भारत में स्थित प्रमुख शनि मंदिरों में भक्त शनि देव से संबंधित पूजा-पाठ करते हैं तथा शनि पीड़ा से मुक्ति की प्रार्थना करते हैं। शनि देव को ‘काला’ या ‘कृष्ण वर्ण’ का बताया जाता है, इसलिए इन्हें काला रंग अधिक प्रिय है। शनि देव काले वस्त्रों में सुशोभित हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार शनि देव का जन्म ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि के दिन हुआ है। जन्म के समय से ही शनि देव श्याम वर्ण, लंबे शरीर, बड़ी आंखों वाले और बड़े केशों वाले थे।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण

शनि देव को समस्त ग्रहों में सबसे शक्तिशाली ग्रह माना गया है। शनि देव के शीश पर अमूल्य मणियों से बना मुकुट सुशोभित है। शनि देव के हाथ में चमत्कारिक यंत्र है, शनि देव न्यायप्रिय और भक्तों को अभयदान देने वाले देव माने जाते हैं। शनि देव प्रसन्न हो जाएं तो रंक को राजा और क्रोधित हो जाएं तो राजा को रंक भी बनाने में देरी नहीं लगाते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि का फल व्यक्ति की जन्म कुंडली के बलवान और निर्बल होने पर तय करते हैं कि जातक को शनि प्रभाव से बचने के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिए। शनि पक्षरहित होकर अगर पाप कर्म की सजा देते हैं तो उत्तम कर्म करने वाले मनुष्य को हर प्रकार की सुख-सुविधा एवं वैभव भी प्रदान करते हैं।

शनि देव की जो भक्तिपूर्वक व्रतोपासना करते हैं, वे पाप की ओर जाने से बच जाते हैं जिससे शनि की दशा आने पर उन्हें कष्ट नहीं भोगना पड़ता। शनि देव की पूजा के पश्चात उनसे अपने अपराधों एवं जाने-अनजाने जो भी आपसे पाप कर्म हुआ हो, उसके लिए क्षमा याचना करनी चाहिए। शनि महाराज की पूजा के पश्चात राहु और केतु की पूजा भी करनी चाहिए। इस दिन शनि भक्तों को पीपल में जल देना चाहिए और पीपल में सूत्र बांधकर सात बार परिक्रमा करनी चाहिए। शनिवार के दिन भक्तों को शनि महाराज के नाम से व्रत रखना चाहिए।

न्याय के देवता

शनि देव नीतिगत न्याय करते हैं। कहते हैं ‘शनि वक्री जनैः पीड़ा’ अर्थात शनि के वक्री होने से लोगों को पीड़ा होती है। इसीलिए शनि की दशा से पीड़ित लोगों को शनि जयंती के दिन उनकी पूजा-आराधना करनी चाहिए। इससे उन्हें सुख प्राप्त होगा और पूरे साल हर शनिवार के दिन पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाने और सरसों के तेल का दीया जलाने से प्रसन्न किया जा सकता है। यह न्याय के देवता हैं, योगी, तपस्या में लीन और हमेशा दूसरों की सहायता करने वाले होते हैं। शनि ग्रह को न्याय का देवता कहा जाता है। यह जीवों को सभी कर्मों का फल प्रदान करते हैं। शनिवार को सुंदरकांड या हनुमान चालीसा का पाठ करके, इसके साथ ही इस दिन शनि चालीसा का पाठ विशेष फल प्रदान कराता है। शनि देव का नाम या स्वरूप ध्यान में आते ही मनुष्य भयभीत अवश्य होता है, लेकिन कष्टतम समय में जब शनि देव से प्रार्थना कर उनका स्मरण करते हैं तो वे ही शनि देव कष्टों से मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए एचपीवी वैक्सीन जरूरी : डीसी

स्कूलों में पीटीएम के दौरान अभिभावकों को वैक्सीन को लेकर जागरूक करें अधिकारी*
शिक्षा व स्वास्थ्य विभाग को तालमेल से अभियान सफल बनाने के निर्देश
डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ की एचपीवी वैक्सीन कार्यक्रम की समीक्षा

झज्जर, 16 मई। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला के अभिभावकों से अपील की है कि वे अपनी किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाव हेतु ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (HPV) वैक्सीन अवश्य लगवाएं। उन्होंने बताया कि यह वैक्सीन सरकार द्वारा निशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है और इसका उद्देश्य बेटियों को गंभीर बीमारी से सुरक्षित रखना है।
डीसी ने कहा कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करें तथा स्कूल स्तर पर व्यापक जागरूकता अभियान चलाएं।
डीसी स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को वैक्सीनेशन कार्यक्रम की समीक्षा कर रहे थे।
उन्होंने निर्देश दिए कि किशोरियों और उनके अभिभावकों को टीकाकरण के महत्व के बारे में सही जानकारी दी जाए।
डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि यह टीकाकरण अभियान मुख्य रूप से 14 से 15 वर्ष आयु वर्ग की किशोरियों के लिए चलाया जा रहा है। यह वैक्सीन एचपीवी के टाइप-16 और 18 से सुरक्षा प्रदान करती है, जो सर्वाइकल कैंसर के प्रमुख कारण माने जाते हैं, साथ ही टाइप-6 और 11 से भी बचाव करती है।
उन्होंने बताया कि सर्वाइकल कैंसर गर्भाशय के निचले हिस्से (सर्विक्स) में विकसित होने वाला कैंसर है, जिसका मुख्य कारण एचपीवी संक्रमण है। धूम्रपान, कम उम्र में विवाह व गर्भधारण, बार-बार प्रसव तथा कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली इसके जोखिम को बढ़ाते हैं।
उन्होंने शिक्षा विभाग को निर्देश दिए कि स्कूलों में किशोरियों का डाटा तैयार कर स्वास्थ्य विभाग के साथ साझा किया जाए। पीटीएम के दौरान

स्वास्थ्य विभाग की टीम को आमंत्रित कर अभिभावकों और छात्राओं को जागरूक किया जाए, ताकि अधिक से अधिक किशोरियां इस अभियान का लाभ उठा सकें। उन्होंने श्रम विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे श्रमिकों के माध्यम से उनकी बेटियों को वैक्सीन के लिए प्रेरित करें।
डीसी ने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और सर्वाइकल कैंसर की घटनाओं को कम करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। जागरूकता, समय पर जांच और बेहतर उपचार सुविधाओं को मजबूत करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।
इस अवसर पर डीएमसी अभिनव सिवाच, सीईओ जिला परिषद मनीष फौगाट, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, डीडीपीओ निशा तंवर, सिविल सर्जन डॉ मंजू कादयान, जिला टीकाकरण नोडल अधिकारी डॉ. बसंत दुबे, डिप्टी डीईओ, डीपीओ सपना होलकर सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

आपदा प्रबंधन कार्यों में प्रशिक्षित कर्मचारियों की अहम भूमिका : डीसी

कुरुक्षेत्र में आयोजित बाढ़ राहत प्रशिक्षण शिविर की प्रतियोगिताओं में झज्जर टीम बनी चैंपियन

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने टीम के सदस्यों को किया सम्मानित

झज्जर, 16 मई। गत दिनों कुरुक्षेत्र स्थित ब्रह्मसरोवर में आयोजित बाढ़ राहत प्रशिक्षण शिविर में जिला झज्जर के कर्मचारियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जिले का नाम रोशन किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं प्रशिक्षण गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन करते हुए जिला झज्जर का नाम रोशन किया। झज्जर पहुँचने पर

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने टीम के सभी सदस्यों को इस उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि आपदा प्रबंधन एवं राहत कार्यों में प्रशिक्षित कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि जिले के कर्मचारियों ने अनुशासन, समर्पण और टीम भावना का परिचय देते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

शिविर में भाग लेने के लिए जिला झज्जर से विभिन्न विभागों के कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई थी। इनमें पशुपालन एवं डेयरिंग विभाग से हरदीप, सिंचाई विभाग से अमित कुमार, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग से सुमित राठी तथा लोक निर्माण विभाग (भवन एवं मार्ग) से दीपक कुमार शामिल रहे।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने टीम के सभी सदस्यों को बधाई देते हुए आपदा प्रबंधन कार्यों में योगदान के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर कर्मचारियों को आपदा की स्थिति में त्वरित एवं प्रभावी राहत कार्य करने के लिए तैयार करते हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में भी जिले की टीमें इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर जिले का नाम रोशन करती रहेंगी। इस अवसर पर डीआरओ मनवीर सांगवान सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

जिला झज्जर की मंडियों व खरीद केंद्रों पर 2 लाख 38 हजार 728 मीट्रिक टन गेहूं की आवक हुई दर्ज : डीसी

खरीद केंद्रों और मंडियों से 97 .5 प्रतिशत गेहूं उपज का हो चुका उठान

झज्जर, 16 मई। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिले में रबी सीजन में गेहूं खरीद एजेंसियों द्वारा अनाज मंडियों में फसल की खरीद सरकार द्वारा निर्धारित 15 मई तक की गई है। डीसी ने बताया कि अभी तक जिले की अनाज मंडियों व परचेज सेंटरों पर गेहूं की 2 लाख 38 हजार 728 मीट्रिक टन आवक दर्ज की गई है, जबकि 2 लाख 27 हजार 6 एमटी गेहूं की खरीद की गई है जिसमें से 97.5 प्रतिशत उपज उठान के साथ 2 लाख 21 हजार 276 मीट्रिक टन गेहूं का उठान किया जा चुका है। उन्होंने खरीद एजेंसियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि किसानों को समय पर भुगतान किया जाए ताकि उन्हें आर्थिक परेशानियों का सामना न करना पड़े। उन्होंने अधिकारियों व एजेंसियों को निर्देश दिए कि मंडियों में आई पूरी उपज की खरीद व उठान में किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो और सभी कार्य सुचारू रूप से संपन्न किए जाएं। जिला प्रशासन खरीद प्रक्रिया को सुचारू रखने के लिए लगातार निगरानी कर रहा है।

बालश्रम व बंधुआ मजदूरी की रोकथाम के लिए प्रशासन सजग : डीसी

श्रमिकों को उनके अधिकारों, सरकारी योजनाओं तथा सहायता व्यवस्थाओं के बारे में जागरूक करें अधिकारी
डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला सतर्कता समिति की बैठक में अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

झज्जर, 16 मई। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में लघु सचिवालय स्थित सभागार में बंधुआ श्रम अधिनियम, 1976 (एएलसी) के अंतर्गत जिला सतर्कता समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले में बंधुआ मजदूरी की रोकथाम, श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा, पुनर्वास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तथा संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। इस दौरान श्रम विभाग के एएलसी राजेन्द्र हुड्डा ने बालश्रम व बंधुआ मजदूरी रोकने की दिशा में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि बंधुआ मजदूरी जैसी कुप्रथा समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है और इसे जड़ से समाप्त करने के लिए प्रशासन पूरी गंभीरता के साथ कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि जिले में किसी भी स्तर पर यदि बाल श्रम से संबंधित मामला सामने आता है तो उस पर तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। संबंधित विभाग समय-समय पर निरीक्षण अभियान चलाकर ईंट-भट्टों, औद्योगिक इकाइयों, निर्माण स्थलों तथा अन्य श्रमिक स्थलों का निरीक्षण करें, ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता को रोका जा सके। उन्होंने कहा कि श्रमिकों को उनके कानूनी अधिकारों, सरकारी योजनाओं तथा सहायता व्यवस्थाओं के बारे में जागरूक करना भी बेहद आवश्यक है। इसके लिए श्रम विभाग, पुलिस विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग तथा अन्य संबंधित विभाग संयुक्त रूप से जागरूकता अभियान चलाएं। गांवों और शहरी क्षेत्रों में श्रमिकों के बीच प्रचार-प्रसार कर यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी व्यक्ति आर्थिक या सामाजिक दबाव के कारण बंधुआ मजदूरी का शिकार न बने। बैठक में उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि श्रमिकों से संबंधित शिकायतों के समाधान में लापरवाही न बरती जाए। यदि किसी व्यक्ति को बंधुआ मजदूरी से संबंधित जानकारी मिलती है तो उस शिकायत पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पीड़ित व्यक्ति को आवश्यक सहायता उपलब्ध करवाई जाए। उन्होंने कहा कि पीड़ित श्रमिकों के पुनर्वास और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ भी समयबद्ध तरीके से उपलब्ध करवाया जाए। श्रम विभाग के एएलसी राजेन्द्र हुड्डा ने बैठक में अधिनियम के तहत जिले में किए जा रहे निरीक्षणों, जागरूकता गतिविधियों तथा श्रमिक कल्याण योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभिन्न स्थानों पर नियमित निगरानी रखी जा रही है तथा श्रमिकों के हितों की सुरक्षा के लिए विभाग लगातार कार्य कर रहा है। उपायुक्त ने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य जिले में श्रमिकों को सुरक्षित, सम्मानजनक और भयमुक्त कार्य वातावरण उपलब्ध करवाना है। इसके लिए सभी विभाग आपसी समन्वय और जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। उन्होंने समिति के सदस्यों से भी सुझाव मांगे और कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता से ही बंधुआ मजदूरी जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त किया जा सकता है।

इन विभागों के अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर डीएमसी अभिनव सिवाच, जिला परिषद सीईओ मनीष फौगाट, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली विशाल कुमार, एसीपी शमशेर सिंह व सुरेंद्र सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, सिविल सर्जन डॉ मंजू कादयान, डीसीपीओ विकास वर्मा, डिप्टी डीईओ रूपेंद्र नांदल, सीडब्ल्यूसी सदस्य पंकज शर्मा, स्वयंसेवी संस्था से मनोज शर्मा, जिला सतर्कता समिति के सदस्य सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

शहरों को कैटल फ्री बनाने के लिए बेहतर योजना तैयार करें विभाग: डीसी

बेसहारा पशुओं की समस्या के समाधान को लेकर डीसी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 मई। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में बेसहारा पशुओं (स्ट्रे कैटल) की समस्या के समाधान को लेकर अधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में नगर परिषद, पशुपालन विभाग, ग्रामीण विकास विभाग सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा समाजसेवी व कई गौशालाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बैठक में उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिए कि शहरी क्षेत्रों को कैटल फ्री बनाने के लिए सभी संबंधित विभाग समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि हरियाणा गौ सेवा आयोग द्वारा अनुदान भी दिया जा रहा है जिसका लाभ लेते हुए गौवंश को गौ शालाओं में शिफ्ट किया जाए।

डीसी ने गौशाला से जुड़े समाजसेवियों से अपील की कि वे सेवा भावना के साथ इस कार्य में प्रशासन का सहयोग करें। बेसहारा पशुओं की सुरक्षा, देखभाल और व्यवस्थापन के लिए जनसहभागिता और सरकारी योजना दोनों को एक साथ जोड़ना आवश्यक है। उपायुक्त ने नगर परिषद झज्जर और बहादुरगढ़ के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे शहरों में बेसहारा पशुओं के प्रबंधन के लिए ठोस योजना तैयार करें और गौशालाओं के साथ संपर्क स्थापित करके गौवंश को वहां स्थानांतरित करें।

उन्होंने ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों से कहा कि वे गांवों में स्थित गोचरान भूमि पर गौशालाएं बनाने की संभावनाओं पर ग्राम पंचायतों से चर्चा करें ताकि स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जा सके।

पशुपालन विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. मनीष डबास ने बैठक में जानकारी दी कि हरियाणा सरकार द्वारा बेसहारा नंदियों

और गायों के लिए 'हरियाणा गौ सेवा आयोग' के माध्यम से अनुदान प्रदान किया जाता है, जिससे गौशालाओं को आर्थिक सहायता मिलती है। उन्होंने कहा कि इस योजना का लाभ सभी पात्र संस्थाएं उठा सकती हैं।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि वे इस योजना की रूपरेखा तैयार करें और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

बेसहारा पशुओं को सुरक्षित रूप से पकड़ने और उन्हें गौशालाओं में भेजने के लिए एक बेहतर और व्यावहारिक रणनीति तैयार की जाए, जिससे ऐसे पशुओं की देखरेख भी सुनिश्चित हो।

इन विभागों के अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर डीएमसी अभिनव सिवाच, सीईओ जिला परिषद मनीष फौगाट, डीडीपीओ निशा तंवर, डिप्टी डायरेक्टर (पशुपालन विभाग) मनीष डबास, सचिव (नगर परिषद झज्जर) पूजा साहू सहित विभिन्न गौशालाओ के प्रतिनिधि व संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

जनभागीदारी से ही बनेगा विकसित भारत :- अंतिमा राजबीर भारद्वाज

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

आज भारत एक नए आत्मविश्वास के साथ विश्व मंच पर आगे बढ़ रहा है। विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, रक्षा, डिजिटल क्रांति और आर्थिक विकास के क्षेत्र में देश निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर रहा है। ऐसे समय में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देशवासियों से "विकसित भारत" के निर्माण में सक्रिय भागीदारी की अपील की है। यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का सामूहिक संकल्प है।

प्रधानमंत्री की अपील का मूल उद्देश्य यही है कि देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों को समझे और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाए। स्वच्छता अभियान हो, "वोकल फॉर लोकल" का समर्थन हो, डिजिटल भुगतान को अपनाना हो या पर्यावरण संरक्षण—इन सभी प्रयासों में जनसहभागिता को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। जब जनता और सरकार एक साथ कदम बढ़ाते हैं, तभी बड़े परिवर्तन संभव होते हैं।

आज आवश्यकता है कि युवा वर्ग शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर बने। किसान आधुनिक तकनीकों को अपनाएँ, व्यापारी ईमानदारी से कर व्यवस्था में सहयोग दें और आम नागरिक सामाजिक सौहार्द बनाए रखें। प्रधानमंत्री की यह अपील केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण से भी जुड़ी हुई है।

"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" का मंत्र आज हर भारतीय के लिए प्रेरणा बन चुका है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने स्तर पर एक छोटा-सा सकारात्मक प्रयास भी करे, तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता।

अंततः यह कहना उचित होगा कि देश की प्रगति केवल सरकारों के प्रयासों से नहीं, बल्कि जनता की जागरूकता और सहभागिता से सुनिश्चित होती है। प्रधानमंत्री की यह अपील वास्तव में एक जनआंदोलन का रूप ले चुकी है। अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान दें

हरियाणा सरकार ने गरीब कल्याण की अनेक योजनाएं चलाकर उन्हें लागू किया : रणबीर गंगवा

-योजनाओं का लाभ मिलने से गरीबों के जीवन स्तर पर हुआ सुधार-
-मिलेनियम पैलेस में दो दिवसीय पंडित दीन दयाल उपाध्याय प्रशिक्षण अभियान-2026 शुरू-

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

राज्य के लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा है कि हरियाणा सरकार ने गरीब कल्याण की अनेक योजनाएं बनाकर उन्हें लागू किया है। इन योजनाओं का लाभ सीधे तौर पर गरीब व जरूरतमंद वर्ग को मिल रहा है, जिससे इन वर्गों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

रणबीर गंगवा शनिवार को शहर के मिलेनियम पैलेस में आयोजित दो दिवसीय पंडित दीन दयाल उपाध्याय प्रशिक्षण अभियान-2026 के शुभारंभ अवसर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़ ने की। मंत्री गंगवा ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य सदैव अंत्योदय रहा है, जिसके तहत अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना है ताकि कोई भी जनकल्याण की योजनाओं से वंचित न रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करके उनका लाभ गरीब व जरूरतमंद तक पहुंचाएं। इस अवसर पर मंत्री ने रिबन काटकर सरकार की योजनाओं की प्रर्दशनी का उद्घाटन

किया।

जिलाध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़ ने स्तर की अध्यक्षता करते हुए कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा का स्वागत किया एव जीवन परिचय किया। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य हर योजना का प्रचार—प्रसार करके गरीब कल्याण तक होना चाहिए।

वरिष्ठ नेता प्रदीप जैन ने हमारी कार्य पद्दति विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पार्टी में सभी दायित्वान कार्यकर्ता हैं। कार्यकर्ताओं से पार्टी को बड़ी अपेक्षाएं होती हैं। कार्यकर्ता ही किसी पार्टी का मजबूत स्तंभ होते हैं और भाजपा की सबसे बड़ी ताकत कार्यकर्ता ही है।

मीडिया प्रभारी राजेन्द्र सपड़ा ने बताया कि प्रशिक्षण महाभियान में पहुंचने पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने सभी वरिष्ठ नेताओं व पदाधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर उपरोक्त के अलावा जिला प्रभारी जवाहर सैनी, मेयर प्रवीन पोपली, सुरेन्द्र आर्य, पूर्व मंत्री डॉ. कमल गुप्ता, पूर्व मंत्री अनूप धानक, वरिष्ठ नेता श्रीनिवास गोयल, महामंत्री कृष्ण सरसाना, चेयरमैन रविन्द्र रॉकी, अजय गावड़, मीडिया प्रभारी राजेन्द्र सपड़ा के अलावा जिला पदाधिकारी, मोर्चों व मंडल पदाधिकारियों सहित भारी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

स्कूल से बाहर बच्चों को मुख्यधारा में लाने की रणनीति पर शिक्षा मंत्रालय की समीक्षा बैठक

संगिनी घोष

शिक्षा मंत्रालय ने स्कूल से बाहर रह रहे बच्चों को दोबारा शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की रणनीतियों की समीक्षा की। इस दौरान राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS), राज्य सरकारों और जिला प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया गया।

बैठक में शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने, ड्रॉपआउट दर कम करने और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने पर चर्चा हुई।

बेहतर समन्वय पर फोकस

अधिकारियों ने ऐसे बच्चों की पहचान और सहायता के लिए शिक्षा संस्थानों, स्थानीय प्रशासन और समुदाय के बीच बेहतर तालमेल की आवश्यकता बताई।

समावेशी शिक्षा में NIOS की भूमिका

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को उन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण मंच बताया गया जो नियमित शिक्षा जारी नहीं रख पाते।

ड्रॉपआउट रोकना बड़ी प्राथमिकता

बैठक में प्रारंभिक हस्तक्षेप, निगरानी व्यवस्था और स्थानीय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रमों को मजबूत करने पर जोर दिया गया।

जिला प्रशासन की सक्रिय भागीदारी

जिला प्रशासन को स्कूलों और परिवारों के साथ मिलकर जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए गए।

सर्वसमावेशी शिक्षा की दिशा में कदम

यह पहल सभी बच्चों तक शिक्षा पहुंचाने और सीखने के बेहतर अवसर सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

ऐसे देखें तो बच्चों को दोबारा स्कूलों से जोड़ना केवल शिक्षा का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और सामूहिक प्रयास का भी हिस्सा है।

मुख्य बिंदु

* शिक्षा मंत्रालय ने समीक्षा बैठक की
* NIOS, राज्यों और जिलों के बीच समन्वय पर जोर
* स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या कम करने पर फोकस
* राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की भूमिका अहम
* जिला प्रशासन को जागरूकता बढ़ाने के निर्देश
* समावेशी और सार्वभौमिक शिक्षा पर जोर

ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग यूनिट हरियाणा की नई तकनीकी क्रांति का बनेगी आधार : सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण बेदी

कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी तथा विधायक विनोद भयाना तथा पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने सिसाय गांव में किया ड्रोन सिटी का उद्घाटन , प्रशिक्षित ड्रोन पायलटों को वितरित किए प्रमाण पत्र

हरियाणा हाँसी: राजेश सलूजा

प्रदेश के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण बेदी ने कहा कि हांसी की ऐतिहासिक धरती से शुरू हुई ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग यूनिट आने वाले समय में हरियाणा को तकनीकी क्षेत्र में नई पहचान दिलाने का कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि अब भारत केवल विदेशी तकनीकों का उपभोक्ता नहीं, बल्कि नई तकनीक विकसित कर विश्व को दिशा देने वाला देश बन रहा है। हरियाणा का युवा विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपनी प्रतिभा साबित करने की क्षमता रखता है।

श्री कृष्ण बेदी हांसी जिला के सिसाय में आयोजित ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग एवं प्रशिक्षण परियोजना के शुभारंभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु, विधायक विनोद भयाना, जिला परिषद चेयरमैन सोनू डाटा, आईएएस अधिकारी वंदना दिसोदिया ,संयुक्त निदेशक जयप्रकाश,एवीपीएल के फाउंडर लेफ्टिनेंट जनरल आर. के आनंद, एसडीएम विकास यादव , डीएसपी रविंद्र सांगवान, दीप सिहाग एमडी डॉ. प्रीति संधू, गांव के सरपंच राजेश,सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्री कृष्ण बेदी ने कहा कि दीप सिसाय एवं उनकी टीम ने गांव की धरती पर आधुनिक ड्रोन निर्माण इकाई स्थापित कर प्रदेश के युवाओं के लिए प्रेरणादायक कार्य किया है। उन्होंने कहा कि जापान, अमेरिका, जर्मनी और चीन जैसे देशों ने भी छोटी तकनीकी इकाइयों से शुरुआत कर वैश्विक पहचान बनाई थी। इसी प्रकार हरियाणा भी अब तकनीकी नवाचार और आधुनिक उद्योगों के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि इस परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग एवं आर्थिक रूप से कमजोर युवाओं को ड्रोन टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण देकर रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने की भी पहल की गई है। उन्होंने कहा कि बदलते समय के साथ युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

श्री बेदी ने कहा कि आज के समय में युवाओं को पारंपरिक रोजगारों के साथ-साथ ड्रोन संचालन, मोबाइल रिपेयरिंग एवं तकनीकी आधारित व्यवसायों की ओर भी बढ़ना चाहिए। सरकार युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार उपलब्ध करवाने का कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम द्वारा युवाओं को स्वरोजगार के लिए अनेक योजनाओं के तहत ऋण सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। पहले डेढ़ लाख रुपये तक के ऋण पर गारंटी की आवश्यकता होती थी, लेकिन अब योग्य युवाओं को बिना गारंटी ऋण उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की गई है। साथ ही सब्सिडी राशि भी बढ़ाई गई है ताकि अधिक से अधिक युवा इसका लाभ उठा सकें।

कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग के लोगों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए लगातार नई योजनाएं लागू कर रही है। सरकार स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए ऋण सीमा बढ़ाने की दिशा में भी कार्य कर रही है। कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी तथा विधायक विनोद भयाना ने गांव में स्थापित ड्रोन सिटी का विधिवत रूप से उद्घाटन किया और प्रशिक्षित ड्रोन पायलटो को प्रमाण पत्र वितरित किया। इस संस्था के संस्थापक दीप सिहाग ने बताया कि 500 युवाओं को ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग दी जाएगी।

विधायक विनोद भयाना ने कहा कि वर्तमान समय ड्रोन तकनीक का समय है और इसका महत्व रक्षा, कृषि तथा विभिन्न विकास कार्यों में लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में ड्रोन सिटी के रूप में विकसित होने की अपार संभावनाएं हैं, जिससे युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे और क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी।

पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि हरियाणा का युवा आज हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहा है। ड्रोन टेक्नोलॉजी भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकों में से एक है और हांसी क्षेत्र में इस प्रकार की आधुनिक यूनिट स्थापित होना पूरे प्रदेश के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना से युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे तथा हरियाणा तकनीकी क्षेत्र में नई पहचान स्थापित करेगा।

जनपद की तीनों तहसीलों में संपूर्ण समाधान दिवस आयोजित

गौतमबुद्धनगर 16 मई, 2026। जनपद गौतमबुद्धनगर की तीनों तहसीलों में आज संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुल 171 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से 14 शिकायतों का निस्तारण संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर ही कर दिया गया। शेष शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को निर्देशित किया गया। तहसील सदर में उप जिलाधिकारी सदर आशुतोष गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में 14 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें से 06 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। इसी क्रम में तहसील दादरी में उप जिलाधिकारी दादरी अनुज नेहरा की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में 112 शिकायतें दर्ज की गई, जिनमें से 07 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। इसी प्रकार तहसील जेवर में उप जिलाधिकारी जेवर दुर्गेश सिंह की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में 45 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से 01 शिकायत का मौके पर निस्तारण किया गया।

प्रचंड गर्मी में सीआरपीएफ की पहल, राहगीरों के लिए लगाई गई शीतल जल सेवा

गयाजी। भीषण गर्मी और लगातार बढ़ते तापमान को देखते हुए 47 बटालियन सीआरपीएफ मुख्यालय द्वारा राहगीरों के लिए शीतल पेयजल की व्यवस्था की गई है। कमांडेंट अवधेश कुमार के दिशा-निर्देश पर मुख्यालय परिसर के समीप वाटर मशीन लगाई गई है, जिससे आने-जाने वाले लोगों को काफी राहत मिल रही है। शीतल जल सेवा का लाभ लेने के लिए दिनभर लोगों की भीड़ लगी रहती है। खासकर कमांडेंट आवास के समीप लगे वाटर मशीन पर राहगीरों, मजदूरों एवं स्थानीय लोगों की काफी भीड़ पानी पीने के लिए जुट रही है। लोग ठंडा पानी पीने के साथ-साथ अपने साथ बोतलों में भी पानी भरकर ले जाते देखे जा रहे हैं। राहगीरों ने कहा कि प्रचंड गर्मी में प्यासे लोगों के लिए पानी की व्यवस्था करना पुण्य का कार्य है। लोगों ने सीआरपीएफ की इस मानवीय पहल की जमकर सराहना करते हुए कहा कि इससे राहगीरों को बड़ी राहत मिल रही है और समाज में सकारात्मक संदेश भी जा रहा है।

अखंड सौभाग्य और पति की लंबी आयु के लिए महिलाओं ने की वट सावित्री पूजा

गयाजी। गया शहर में वट सावित्री पूजा को लेकर सुहागिन महिलाओं में खास उत्साह देखा गया। महिलाएं सोलह श्रृंगार कर सुबह से ही विभिन्न स्थानों पर स्थित वट वृक्ष की पूजा-अर्चना में जुटी रहीं। महिलाओं ने विधि-विधान के साथ वट वृक्ष की परिक्रमा कर धागा बांधा और अपने पति की लंबी आयु एवं सुख-समृद्धि की कामना की। श्रद्धालु रेखा देवी ने बताया कि वट सावित्री व्रत हिंदू धर्म में अखंड सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि माता सावित्री ने अपने तप, प्रेम और दृढ़ संकल्प से अपने पति सत्यवान के प्राण यमराज से वापस लाए थे। उसी परंपरा को निभाते हुए महिलाएं यह व्रत रखती हैं और वट वृक्ष की पूजा करती हैं। पूजा स्थलों पर महिलाओं द्वारा भक्ति गीत एवं कथा श्रवण का भी आयोजन किया गया। शहर के विभिन्न मंदिरों एवं वट वृक्ष स्थलों पर सुबह से श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी रही।

6400 मीटर ऊंचे गोरिचेन ग्लेशियर पर 6 बिहार बटालियन एनसीसी कैडेट का परचम

एडवांस माउंटेनियरिंग कैंप में गया जी के कैडेट का शानदार प्रदर्शन–कर्नल पंकज

गयाजी। 6 बिहार बटालियन एनसीसी के कैडेट अभिषेक कुमार ने अरुणाचल प्रदेश स्थित 6400 मीटर ऊंचे गोरिचेन ग्लेशियर को सफलतापूर्वक फतह कर गया जिले एवं अपने संस्थान का नाम गौरवान्वित किया है। वर्तमान में वे अरुणाचल प्रदेश में आयोजित एडवांस माउंटेनियरिंग कैंप में भाग ले रहे हैं।

अभिषेक कुमार को यह अवसर 6 बिहार बटालियन एनसीसी द्वारा प्रदान किया गया। इससे पूर्व उन्होंने निमास (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग एंड एडवेंचर स्पोर्ट्स), अरुणाचल प्रदेश से बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया था। उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन, अनुशासन और साहस को देखते हुए एडवांस माउंटेनियरिंग कैंप के लिए चयनित किया गया। हाल ही में उन्होंने एनसीसी का 'बी' सर्टिफिकेट परीक्षा भी उत्तीर्ण की है।

इस उपलब्धि पर 6 बिहार बटालियन एनसीसी के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल पंकज कुमार (कीर्ति चक्र) ने कहा कि यह सफलता अन्य कैडेटों के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने कहा कि एनसीसी युवाओं में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, साहस एवं राष्ट्रसेवा की भावना विकसित करने का कार्य कर रही है।

इस अवसर पर सुबेदार मेजर विक्रम सिंह, गया कॉलेज के प्राचार्य सतीश सिंह चंद्र तथा 3/6 कंपनी 6 बिहार बटालियन एनसीसी के एएनओ लेफ्टिनेंट संजय तिवारी ने भी अभिषेक कुमार को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

पूर्व मंत्री पंडित हरिशंकर तिवारी की तृतीय पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। पूर्वांचल के कद्दावर नेता, ब्राह्मण शिरोमणि एवं उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री पंडित हरिशंकर तिवारी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर कलेक्ट्रेट कचहरी स्थित चेंबर में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपस्थित अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा पंडित जी के चित्र पर पुष्पमाला अर्पित कर एवं दो मिनट का मौन रखकर की गई।

श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने पंडित हरिशंकर तिवारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उन्हें जन-जन का नेता बताया। उन्होंने कहा कि पंडित जी का पूरा जीवन समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति की सेवा और उसके अधिकारों की रक्षा के लिए समर्पित रहा। वे सदैव गरीबों, मजलूमों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों की आवाज बनकर खड़े रहे और उनके हक की लड़ाई को मजबूती से उठाते रहे।

वक्ताओं ने कहा कि पंडित हरिशंकर तिवारी केवल एक राजनेता ही नहीं, बल्कि एक विचारधारा थे, जिन्होंने अपने कर्मों से समाज में न्याय और समानता की भावना को मजबूत किया। उनके संघर्षों, त्याग और जनसेवा की भावना से आज के युवाओं और कार्यकर्ताओं को प्रेरणा लेनी चाहिए।

योगी सरकार की मंशा पर खरी ए एस पी अशोक वर्मा की कर्तव्य निष्ठा, कानपुर सेक्टर में और बढ़ी सीआईडी की सक्रियता

सुनील बाजपेई

कानपुर। जिसकी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्य शैली वाली निष्पक्ष जांच पर आज भी लोगों को पूरा भरोसा है। कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में वह सीबी सीआईडी कानपुर सेक्टर में पहले से ज्यादा सक्रिय हो गई है। अवगत कराते चलें कि कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में निष्पक्ष जांच पड़ताल के रूप में अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही में अग्रणी जिस सीआईडी पुलिस की सतर्कता और सक्रियता की चर्चा की जा रही है, आजकल उस सीआईडी के कानपुर सेक्टर की कमान निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की प्रबल विचारधारा के अनुरूप अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की हर संभव सहायता में भी अग्रणी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले तेजतर्रार, व्यवहार कुशल तथा बेहद स्वाभिमानी और परोपकारी स्वभाव के एएसपी अशोक कुमार वर्मा के हाथ में है।

अपनी जुझारू नौकरी के अबतक कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए अनेक अपराधियों को जेल की हवा खिला चुके बृजभूमि मथुरा में जन्मे और वर्तमान में जनपद हाथरस के निवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार से संबंध रखने वाले कठोर परिश्रम,अनुशासन और सेवा भाव के भी प्रतीक अपर पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार वर्मा के अब तक के कार्यकाल के विवेचन से यह भी साबित होता है कि हालात चाहे जैसे रहे हों लेकिन उन्होंने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया। जानकारी के मुताबिक1989 में उत्तर प्रदेश पुलिस में उप निरीक्षक के पद पर भर्ती होकर अपने कैरियर की शुरुआत करते हुए अलीगढ़ के अलिया गैंग के अलिया सहित ३ हार्ड कोर अपराधियों के .एनकाउंटर में पूर्ण सफाए के फलस्वरूप ही आउट आफ़ टर्न पदोन्नति पाकर 1998 में इंस्पेक्टर और करीब 16 वर्षों तक इसी पद पर जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए कठोर परिश्रम और कर्तव्य के प्रति अपनी ईमानदारी पूर्ण प्रगाढ़ निष्ठा के चलते वर्ष २014 में प्रोन्नति पाकर डिप्टी एस पी और अब अपर पुलिस अधीक्षक यानी एएसपी के पद पर पहुंचने वाले बिरले पुलिस अधिकारियों में से एक सरल और शालीन स्वभाव के सीबीसीआईडी के सेक्टर ऑफिसर एएसपी अशोक कुमार वर्मा की कार्यशैली भी संभ्रांत असहाय लोगों की हितरक्षक और बहुत मैत्रीपूर्ण भी मानी जाती है ,जिसके अनुरूप ही लोकहित में निरंतर निरत कर्म योगी एएसपी अशोक कुमार वर्मा जहां उचित पात्र लोगों की हर संभव सहायता करते हैं। वहीं कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ शठे शाठ्यम समाचरेत वाली, कहावत चरितार्थ करने से भी नहीं चूकते। यही वजह है कि अपने विभागीय कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा के साथ करने वाले लोकप्रिय कार्यशैली के ए एस पी अशोक कुमार वर्मा की कर्तव्य के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा उनकी जुझारू नौकरी के अब तक के कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए दर्जनों शातिरों को सबक सिखाने में भी सफल हो चुकी है।

कुल मिलाकर अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश निर्देशों का अक्षरश: पालन करने में भी अग्रणी होने के साथ ही पीड़ितों के पक्ष में और अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई के रूप में योगी सरकार का इकबाल भी लगातार बुलंद कर रहे लोकहित में अपनी धुन के पक्के कठोर परिश्रमी एडिशनल एसपी अशोक कुमार वर्मा की निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली वाली नेतृत्व कुशलता का सार्थक परिणाम सीआईडी की लोकप्रियता और जन विश्वास में और अधिक इजाफा करने वाला भी माना जा रहा है।

वैश्विक संकट के दौर में राष्ट्रहित सर्वोपरि: संयम और सहयोग से आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ने का आह्वान

"विदेशी मुद्रा बचाना आज सबसे बड़ी राष्ट्रीय जिम्मेदारी"– ऊर्जा संकट और महंगाई का असर पूरी दुनिया पर "वैश्विक संकट में एकजुट होने की जरूरत" : उपेंद्र सिंह

वैश्विक संकट के इस दौर में संयम, स्वदेशी, ईंधन बचत और आत्मनिर्भरता ही भारत को मजबूत बनाएंगे : उपेंद्र सिंह

यह केवल आर्थिक चुनौती नहीं, बल्कि देश की आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता की परीक्षा में जिम्मेदारी निभाने का समय" वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने की संयम और सहयोग की अपील

उन्होंने अपील की कि सरकार की अपीलों को गंभीरता से समझें और राष्ट्रहित में अपनी जिम्मेदारी निभाएं, ताकि भविष्य में देश किसी बड़े ऊर्जा संकट से सुरक्षित रह सके।

उत्तर प्रदेश, संजय साग़र सिंह। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध और ईरान-अमेरिका तनाव के बीच वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहराते संकट को लेकर वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने संयम, सतर्कता, समझदारी और राष्ट्रहित में सामूहिक जिम्मेदारी निभाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि यह केवल आर्थिक चुनौती नहीं, बल्कि देश की आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता की परीक्षा का समय है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूर्व की सरकारों की तरह किसी प्रकार के दान की अपील नहीं कर रहे, बल्कि देशहित में ईंधन की बचत, आयात में कमी और सामूहिक सहयोग की बात कर रहे हैं। उनका उद्देश्य विदेशी मुद्रा भंडार को सुरक्षित रखना और भारत को भविष्य के बड़े ऊर्जा संकट से बचाना है।

"कोरोना महामारी वैश्विक संकट थी, ईरान युद्ध इस दशक का सबसे बड़ा संकट"

उपेंद्र सिंह ने कहा कि जिस प्रकार कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया था, उसी तरह ईरान-अमेरिका संघर्ष और खाड़ी देशों में जारी युद्ध इस दशक का सबसे बड़ा वैश्विक संकट बनकर उभरा है। उन्होंने याद दिलाया कि 1990-92 के आर्थिक संकट में भारत को 67 टन सोना गिरवी रखना पड़ा था। आज परिस्थितियां अलग जरूर हैं, लेकिन चुनौतियां उतनी ही गंभीर हैं।

उन्होंने कहा कि युद्ध के कारण वैश्विक तेल और गैस आपूर्ति प्रभावित हो रही है, जिससे पेट्रोल, डीजल, गैस और केमिकल उत्पादों की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। हालांकि अन्य देशों की तुलना में भारत में स्थिति अभी भी काफी बेहतर बनी हुई है।

ऊर्जा संकट और महंगाई का असर पूरी दुनिया पर

वरिष्ठ नेता ने कहा कि खाड़ी युद्ध के कारण दुनिया भर में सप्लाई चेन प्रभावित हुई है। कई विकसित देशों में ईंधन संकट गहराने लगा है और खाद्य सामग्री से लेकर रसायनों तक की कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि वैश्विक परिस्थितियों का सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था, परिवहन व्यवस्था और आम नागरिकों के जीवन पर पड़ सकता है।

उन्होंने बताया कि भारत को हर दिन महंगे कच्चे तेल, गैस और केमिकल आदि के कारण हजारों करोड़ रुपये अतिरिक्त खर्च करने पड़ रहे हैं। खाद्य तेल, उर्वरक और सोने के आयात पर विदेशी मुद्रा का भारी दबाव बढ़ा है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री मोदी देशवासियों से अनावश्यक खर्चों में कटौती और ईंधन के विवेकपूर्ण उपयोग की अपील कर रहे हैं।

"विदेशी मुद्रा बचाना आज सबसे बड़ी राष्ट्रीय जिम्मेदारी"

उपेंद्र सिंह ने कहा कि भारत का विदेशी मुद्रा भंडार युद्ध शुरू होने के समय लगभग 720 अरब डॉलर था, जो अब घटकर करीब 690 अरब डॉलर के आसपास पहुंच गया है। ऐसे में आयात पर निर्भरता कम करना और स्वदेशी को बढ़ावा देना समय की मांग है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सरकार पेट्रोल-डीजल और गैस का उपयोग बंद करने की बात नहीं कर रही, बल्कि जरूरत और समझदारी के अनुसार उपयोग करने की सलाह दे रही है। सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग, घरेलू पर्यटन को बढ़ावा और ईंधन की बचत जैसे कदम देश को मजबूत बना सकते हैं।

"वैश्विक संकट में एकजुट होने की जरूरत"

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार देश ने कोरोना महामारी के दौरान एकजुट होकर कठिन परिस्थितियों का सामना किया था, उसी तरह आज भी राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी होगी। यह समय अफवाहों या राजनीति का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हित में सामूहिक सहयोग का है।

उपेंद्र सिंह ने कहा कि वैश्विक संकट के इस दौर में संयम, स्वदेशी, ईंधन बचत और आत्मनिर्भरता ही भारत को मजबूत बनाएंगे। उन्होंने अपील की कि सरकार की अपीलों को गंभीरता से समझें और राष्ट्रहित में अपनी जिम्मेदारी निभाएं, ताकि भविष्य में देश किसी बड़े ऊर्जा संकट से सुरक्षित रह सके।

नई तकनीक की सोच से भविष्य का भारत गढ़ रहे देश के ये विज्ञानी

● डॉ. विजय गर्ग

इस परिवर्तन के पीछे देश के हजारों वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और नवाचार करने वाले युवाओं की अथक मेहनत छिपी है। ये विज्ञानी केवल मशीनें या तकनीक नहीं बना रहे, बल्कि वे ऐसे भारत का निर्माण कर रहे हैं जो आत्मनिर्भर, आधुनिक, वैज्ञानिक सोच वाला और वैश्विक नेतृत्व करने में सक्षम हो। नई तकनीक की सोच से देश के ये वैज्ञानिक आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मजबूत, सुरक्षित और विकसित भारत की नींव तैयार कर रहे हैं।

भारत आज विज्ञान और तकनीक के ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां नई सोच, नवाचार और अनुसंधान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे देश के भविष्य की दिशा तय कर रहे हैं। कभी विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विकसित देशों पर निर्भर रहने वाला भारत आज अंतरिक्ष, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, रक्षा अनुसंधान, क्वांटम तकनीक, डिजिटल क्रांति, ऊर्जा, कृषि और स्वास्थ्य विज्ञान जैसे क्षेत्रों में अपनी मजबूत पहचान बना चुका है।

इस परिवर्तन के पीछे देश के हजारों वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और नवाचार करने वाले युवाओं की अथक मेहनत छिपी है। ये विज्ञानी केवल मशीनें या तकनीक नहीं बना रहे, बल्कि वे ऐसे भारत का निर्माण कर रहे हैं जो आत्मनिर्भर, आधुनिक, वैज्ञानिक सोच वाला और वैश्विक नेतृत्व करने में सक्षम हो।

नई तकनीक की सोच से देश के ये वैज्ञानिक आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मजबूत, सुरक्षित और विकसित भारत की नींव तैयार कर रहे हैं।

विज्ञान और तकनीक: नए भारत की आधारशिला

आज का युग ज्ञान और तकनीक का युग है। जिस देश के पास बेहतर विज्ञान, अनुसंधान और तकनीकी क्षमता होगी, वही भविष्य में विश्व का नेतृत्व करेगा। भारत ने यह बात समय रहते समझ ली।

इसी सोच के कारण आज देश में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार, शिक्षण संस्थान, स्टार्टअप, अनुसंधान प्रयोगशालाएं और युवा वैज्ञानिक मिलकर नई तकनीकों पर कार्य कर रहे हैं।

भारत में विज्ञान अब केवल किताबों तक सीमित नहीं है। गांवों की खेती से लेकर शहरों की स्मार्ट तकनीक तक, अस्पतालों से लेकर अंतरिक्ष मिशनों तक—हर जगह विज्ञान और नवाचार की भूमिका बढ़ती जा रही है।

अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की उड़ान

जब भी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की बात होती है, तो सबसे पहले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी Indian Space Research Organisation का नाम सामने आता है।

सीमित संसाधनों के बावजूद भारतीय वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष विज्ञान में दुनिया को चौंकाया है। चंद्रयान और मंगलयान जैसे मिशनों ने यह साबित किया कि भारत कम लागत में भी उच्च स्तरीय अंतरिक्ष तकनीक विकसित कर सकता है।

Chandrayaan-3 Moon Landing की सफलता ने पूरी दुनिया का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बना। इसके पीछे भारतीय वैज्ञानिकों की वर्षों की मेहनत और तकनीकी क्षमता थी।

इसी तरह आदित्य-एल1 मिशन के माध्यम से सूर्य का अध्ययन करने की दिशा में भी भारत ने महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया। ये उपलब्धियां केवल वैज्ञानिक सफलता नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी भारत की पहचान हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल क्रांति

आज पूरी दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तेजी से विकसित हो रही है। भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

AI आधारित तकनीकें स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, बैंकिंग, सुरक्षा और उद्योगों में बड़े बदलाव ला रही हैं। भारतीय वैज्ञानिक ऐसी तकनीकें विकसित कर रहे हैं जो भाषा की बाधाओं को कम कर सकें, रोगों की पहचान तेज कर सकें और ग्रामीण क्षेत्रों तक डिजिटल सेवाएं पहुंचा सकें।

भारत की डिजिटल क्रांति ने भी दुनिया को प्रभावित किया है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI), डिजिटल पहचान प्रणाली और ऑनलाइन सेवाओं ने तकनीक को आम लोगों तक पहुंचाया है।

आज गांव का किसान भी मोबाइल से भुगतान कर रहा है और छात्र ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर रहा है। यह परिवर्तन वैज्ञानिक सोच और तकनीकी नवाचार का परिणाम है।

स्वास्थ्य विज्ञान में नई उम्मीदें

कोविड-19 महामारी के दौरान भारतीय वैज्ञानिकों ने जिस तेजी से वैक्सीन विकसित की, उसने पूरी दुनिया को प्रभावित किया।

Bharat Biotech और अन्य भारतीय संस्थानों के वैज्ञानिकों ने स्वदेशी वैक्सीन विकसित कर यह साबित किया कि भारत स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की क्षमता रखता है।

आज भारतीय वैज्ञानिक कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह और आनुवंशिक रोगों के उपचार पर भी लगातार शोध कर रहे हैं।

टेलीमेडिसिन, रोबोटिक सर्जरी, डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड और AI आधारित मेडिकल जांच जैसी तकनीकें स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी बना रही हैं।

कृषि तकनीक से बदलता ग्रामीण भारत

भारत की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है। इसलिए वैज्ञानिक खेती और कृषि तकनीक का विकास देश के भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय कृषि वैज्ञानिक ऐसी नई फसल किस्में विकसित कर रहे हैं जो कम पानी में भी अधिक उत्पादन दे सकें। ड्रोन तकनीक, मिट्टी परीक्षण, स्मार्ट सिंचाई और मौसम पूर्वानुमान जैसी तकनीकें किसानों की मदद कर रही हैं।

नई तकनीकों के कारण खेती अधिक वैज्ञानिक और लाभकारी बन रही है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिल रही है।

रक्षा अनुसंधान और आत्मनिर्भर भारत

देश की सुरक्षा के लिए आधुनिक तकनीक बेहद आवश्यक है। भारत के वैज्ञानिक रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

Defence Research and Development Organisation के वैज्ञानिक मिसाइल, रडार, ड्रोन, आधुनिक हथियार और रक्षा प्रणाली विकसित कर रहे हैं।

भारत ने स्वदेशी लड़ाकू विमान, मिसाइल तकनीक और रक्षा उपकरणों के निर्माण में बड़ी प्रगति की है। इससे देश की सुरक्षा मजबूत हुई है और विदेशी निर्भरता कम हुई है।

ऊर्जा और पर्यावरण के क्षेत्र में नवाचार

जलवायु परिवर्तन आज पूरी दुनिया के सामने बड़ी चुनौती है। भारत के वैज्ञानिक स्वच्छ ऊर्जा और पर्यावरण संरक्षण के लिए नई तकनीकों पर काम कर रहे हैं।

सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहनों के क्षेत्र में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

वैज्ञानिक ऐसी तकनीकें विकसित कर रहे हैं जो प्रदूषण कम करें और ऊर्जा को अधिक टिकाऊ बनाएं। इससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण तैयार किया जा सकता है।

युवा वैज्ञानिक और स्टार्टअप संस्कृति

आज भारत में युवा वैज्ञानिकों और तकनीकी उद्यमियों की नई पीढ़ी उभर रही है।

देश के अनेक छात्र और शोधकर्ता स्टार्टअप के माध्यम से नई तकनीकें विकसित कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोबोटिक्स, कृषि और अंतरिक्ष तकनीक में भारतीय युवाओं के स्टार्टअप वैश्विक स्तर पर पहचान बना रहे हैं।

यह नई पीढ़ी केवल नौकरी खोजने तक सीमित नहीं है, बल्कि रोजगार पैदा करने और समस्याओं के समाधान खोजने की दिशा में कार्य कर रही है।

विज्ञान शिक्षा की भूमिका

भविष्य का भारत तभी मजबूत बन सकता है जब विज्ञान शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाया जाए।

विद्यालयों और कॉलेजों में प्रयोगात्मक शिक्षा, अनुसंधान संस्कृति और नवाचार को बढ़ावा देना आवश्यक है। केवल रटने वाली शिक्षा से वैज्ञानिक सोच विकसित नहीं हो सकती।

बच्चों को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और नई खोजों के लिए प्रेरित करना होगा।

चुनौतियां भी कम नहीं

हालांकि भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियां मौजूद हैं—

अनुसंधान पर सीमित खर्च

ग्रामीण क्षेत्रों में वैज्ञानिक सुविधाओं की कमी

प्रतिभाओं का विदेशों की ओर पलायन

विज्ञान शिक्षा में असमानता

अनुसंधान और उद्योग के बीच कम समन्वय

इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है ताकि भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व कर सके।

वैज्ञानिक सोच क्यों जरूरी है?

किसी भी विकसित राष्ट्र की पहचान केवल उसकी आर्थिक ताकत से नहीं होती, बल्कि उसकी वैज्ञानिक सोच से होती है।

वैज्ञानिक सोच व्यक्ति को तर्क, विश्लेषण और समाधान की दिशा में आगे बढ़ाती है। अंधविश्वास और भ्रम से बाहर निकालकर विज्ञान समाज को प्रगतिशील बनाता है।

भारत के वैज्ञानिक केवल तकनीक नहीं बना रहे, बल्कि वे देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी विकसित कर रहे हैं।

भविष्य का भारत कैसा होगा?

यदि भारत इसी तरह विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहा, तो आने वाले वर्षों में देश दुनिया की प्रमुख वैज्ञानिक शक्तियों में शामिल हो सकता है।

भविष्य का भारत—

डिजिटल रूप से अधिक मजबूत होगा

स्वास्थ्य सेवाओं में अधिक सक्षम होगा

स्वच्छ ऊर्जा में अग्रणी होगा

अंतरिक्ष विज्ञान में नई ऊंचाइयों तक पहुंचेगा

रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भर बनेगा

कृषि को अधिक आधुनिक बनाएगा

और इस परिवर्तन के केंद्र में होंगे देश के वैज्ञानिक, शोधकर्ता और नवाचार करने वाले युवा।

निष्कर्ष

नई तकनीक की सोच से भारत का भविष्य गढ़ने वाले वैज्ञानिक वास्तव में राष्ट्र निर्माण के सच्चे शिल्पकार हैं। उनकी मेहनत, शोध और नवाचार केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे करोड़ों लोगों के जीवन को बेहतर बना रहे हैं।

भारत आज जिस आत्मविश्वास के साथ विश्व मंच पर खड़ा है, उसके पीछे विज्ञान और तकनीक की बड़ी भूमिका है। अंतरिक्ष से लेकर डिजिटल क्रांति तक, स्वास्थ्य से लेकर रक्षा अनुसंधान तक—हर क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिक देश को नई दिशा दे रहे हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि समाज विज्ञान को सम्मान दे, युवाओं को अनुसंधान के लिए प्रेरित करे और वैज्ञानिक सोच को राष्ट्रीय संस्कृति का हिस्सा बनाए।

बच्चों के लिए साहित्य और पत्रिकाएँ: एक व्यापक अन्वेषण

डॉ. विजय गर्ग

बच्चों के लिए साहित्य (बाल साहित्य) मानव सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण रचनात्मक उपलब्धियों में से एक है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कार, कल्पना और व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। इसके साथ-साथ बच्चों की पत्रिकाएँ इस साहित्यिक परंपरा को जीवंत, नियमित और रोचक बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

बाल साहित्य और बाल पत्रिकाएँ मिलकर बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का ऐसा मजबूत आधार तैयार करती हैं, जो उन्हें एक संवेदनशील और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है।

1. बाल साहित्य का अर्थ और स्वरूप

बाल साहित्य से आशय उन सभी लिखित एवं चित्रात्मक रचनाओं से है जो बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती हैं, ताकि वे सीखें, समझें और आनंद प्राप्त करें। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, चित्र-पुस्तकें, लोककथाएँ, परीकथाएँ, जीवनी, विज्ञान आधारित लेख आदि शामिल होते हैं।

बाल साहित्य की एक विशेषता यह है कि यह केवल बच्चों तक सीमित नहीं रहता—अक्सर बड़े भी इसे पढ़ते और सराहते हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

- सरल और सहज भाषा
- कल्पनाशीलता और रचनात्मकता
- नैतिक मूल्यों का समावेश
- मनोरंजन और शिक्षा का संतुलन
- चित्रों और कथानकों का आकर्षक मेल

2. ऐतिहासिक विकास

(क) मौखिक परंपरा

प्रारंभ में बाल साहित्य लोककथाओं, लोरियों और कहानियों के रूप में मौखिक रूप से प्रसारित होता था।

(ख) प्रारंभिक लिखित दौर

17वीं–18वीं शताब्दी में बच्चों के लिए विशेष पुस्तकों का प्रकाशन शुरू हुआ और बाल साहित्य एक अलग विधा के रूप में विकसित हुआ।

(ग) स्वर्ण युग (19वीं शताब्दी)

इस काल में कल्पनाशील और मनोरंजक साहित्य का विकास हुआ, जहाँ केवल शिक्षा नहीं बल्कि आनंद भी महत्वपूर्ण बन गया।

(घ) आधुनिक काल

आज बाल साहित्य में विविधता है—विज्ञान कथा, सामाजिक विषय, पर्यावरण, तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण सभी शामिल हैं।

3. बाल साहित्य का महत्व

(क) बौद्धिक विकास

बाल साहित्य बच्चों की भाषा, सोचने की क्षमता और ज्ञान को विकसित करता है।

(ख) भावनात्मक विकास

कहानियाँ बच्चों को विभिन्न भावनाओं को समझने और व्यक्त करने में मदद करती हैं।

(ग) नैतिक शिक्षा

कथाओं के माध्यम से ईमानदारी, साहस और सहयोग जैसे मूल्यों का विकास होता है।

(घ) कल्पनाशक्ति का विकास

बाल साहित्य बच्चों को कल्पनाओं की दुनिया में ले जाकर रचनात्मक सोच विकसित करता है।

(ङ) सांस्कृतिक जागरूकता

यह बच्चों को अपने समाज, संस्कृति और परंपराओं से जोड़ता है।

4. बाल पत्रिकाएँ: साहित्य का विस्तार

बाल पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले ऐसे माध्यम हैं जो बच्चों के लिए विविध प्रकार की सामग्री प्रस्तुत करती हैं। इनमें कहानियाँ, कविताएँ, चित्र, पहेलियाँ, विज्ञान लेख, कॉमिक्स और गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

विशेष रूप से, बाल साहित्य के अंतर्गत पत्रिकाएँ भी आती हैं, जो बच्चों के लिए तैयार की जाती हैं।

5. बाल पत्रिकाओं की भूमिका

(क) नियमित पढ़ने की आदत

पत्रिकाएँ समय-समय पर आती हैं, जिससे बच्चों में पढ़ने की निरंतरता बनी रहती है।

(ख) मनोरंजक शिक्षा

पहेलियाँ, क्विज़ और गतिविधियाँ सीखने को रोचक बनाती हैं।

(ग) विविध विषयों से परिचय

एक ही पत्रिका में बच्चे अनेक विषयों—विज्ञान, इतिहास और कला—से परिचित होते हैं।

(घ) रचनात्मक अभिव्यक्ति

कई पत्रिकाएँ बच्चों की रचनाओं को प्रकाशित करती हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

(ङ) समसामयिक ज्ञान

पत्रिकाएँ बच्चों को वर्तमान घटनाओं और नई जानकारी से जोड़ती हैं।

6. बाल पत्रिकाओं के प्रकार

शैक्षिक पत्रिकाएँ – ज्ञान और विज्ञान पर आधारित

कहानी पत्रिकाएँ – कहानियाँ और कॉमिक्स

गतिविधि पत्रिकाएँ – खेल, पहेलियाँ और DIY

सांस्कृतिक पत्रिकाएँ – भाषा और परंपराओं पर आधारित

डिजिटल पत्रिकाएँ – ऑनलाइन और इंटरैक्टिव सामग्री

7. बाल साहित्य और पत्रिकाओं का संबंध

- बाल पत्रिकाएँ, बाल साहित्य का ही विस्तार हैं।
- ये बच्चों को छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से साहित्य से जोड़ती हैं।
- धारावाहिक कहानियाँ बच्चों में उत्सुकता बनाए रखती हैं।
- कई प्रसिद्ध लेखक अपनी शुरुआत पत्रिकाओं से करते हैं।

8. आधुनिक चुनौतियाँ

आज के समय में बाल साहित्य और पत्रिकाएँ कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं:

- डिजिटल उपकरणों का बढ़ता प्रभाव
- बच्चों की घटती पढ़ने की आदत
- ध्यान अवधि (Attention Span) में कमी
- सामग्री का व्यावसायीकरण

हालाँकि, डिजिटल प्लेटफॉर्म नए अवसर भी प्रदान कर रहे हैं, जैसे ई-बुक्स और इंटरैक्टिव पत्रिकाएँ।

9. भविष्य की दिशा

भविष्य में बाल साहित्य और पत्रिकाएँ अधिक तकनीकी और समावेशी होंगी:

- डिजिटल और प्रिंट का मिश्रण
- मल्टीमीडिया आधारित कहानियाँ
- विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का समावेश
- व्यक्तिगत (Personalized) पढ़ने का अनुभव

निष्कर्ष

बाल साहित्य और बाल पत्रिकाएँ केवल पढ़ने का साधन नहीं हैं, बल्कि वे बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, कल्पनाशक्ति और सामाजिक समझ का आधार हैं।

यह साहित्य बच्चों को सोचने, महसूस करने और सपने देखने की क्षमता देता है। एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है कि हम बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा दें और उन्हें गुणवत्तापूर्ण साहित्य और पत्रिकाएँ उपलब्ध कराएँ।

अंततः, बाल साहित्य केवल कहानियाँ नहीं सुनाता—यह भविष्य गढ़ता है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, मलोट, पंजाब

बाल पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले ऐसे माध्यम हैं जो बच्चों के लिए विविध प्रकार की सामग्री प्रस्तुत करती हैं। इनमें कहानियाँ, कविताएँ, चित्र, पहेलियाँ, विज्ञान लेख, कॉमिक्स और गतिविधियाँ शामिल होती हैं। विशेष रूप से, बाल साहित्य के अंतर्गत पत्रिकाएँ भी आती हैं, जो बच्चों के लिए तैयार की जाती हैं।

पढ़ाई और जीवन के बीच बनाए संतुलन

डॉ विजय गर्ग

आज का समय प्रतिस्पर्धा का समय है। हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की दौड़ लगी हुई है। स्कूलों में अच्छे अंक लाने की होड़, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, करियर की चिंता और भविष्य की असुरक्षा ने विद्यार्थियों के जीवन को पहले की तुलना में कहीं अधिक तनावपूर्ण बना दिया है। माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे हर परीक्षा में अव्वल आएं, शिक्षक बेहतर परिणामों की अपेक्षा रखते हैं और समाज सफलता को अक्सर अंकों और पदों से मापने लगा है। ऐसे माहौल में विद्यार्थियों का अधिकांश समय केवल पढ़ाई तक सीमित होकर रह जाता है। धीरे-धीरे जीवन से खेल, संगीत, मित्रता, परिवार के साथ समय, प्रकृति और आत्मिक शांति गायब होने लगती है। यही कारण है कि आज "पढ़ाई और जीवन के बीच संतुलन" एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन चुका है।

पढ़ाई जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन जीवन केवल पढ़ाई नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक संतुलित, संवेदनशील और समझदार मनुष्य बनाना भी है। यदि कोई विद्यार्थी पढ़ाई में बहुत अच्छा है लेकिन मानसिक रूप से तनावग्रस्त है, शारीरिक रूप से कमजोर है, परिवार और समाज से कट चुका है या जीवन का आनंद लेना भूल गया है, तो ऐसी शिक्षा अधूरी कही जाएगी। इसलिए आवश्यक है कि विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ जीवन के अन्य पहलुओं को भी महत्व दें।

आज कई विद्यार्थी सुबह से रात तक केवल कोचिंग, होमवर्क और ऑनलाइन क्लासों में व्यस्त रहते हैं। छोटे बच्चों तक का बचपन बस्तों के बोझ तले दबता जा रहा है। खेल के मैदान खाली होते जा रहे हैं और मोबाइल तथा किताबों के बीच सीमित जीवन ने बच्चों को मानसिक दबाव की ओर धकेल दिया है। कुछ विद्यार्थी इतने अधिक तनाव में आ जाते हैं कि असफलता का छोटा-सा डर भी उन्हें तोड़ देता है। यह स्थिति चिंताजनक है। पढ़ाई यदि जीवन को बेहतर बनाने के लिए है, तो वह जीवन को बोझिल क्यों बना रही है? यह प्रश्न समाज, शिक्षा व्यवस्था और परिवार सभी को सोचने पर मजबूर करता है।

संतुलन का अर्थ यह नहीं कि पढ़ाई को नजरअंदाज कर दिया जाए। संतुलन का अर्थ है—समय और ऊर्जा का सही विभाजन। जिस प्रकार एक साइकिल दोनों पहियों के संतुलन से चलती है, उसी प्रकार जीवन भी पढ़ाई और व्यक्तिगत खुशियों के संतुलन से आगे बढ़ता है। यदि विद्यार्थी केवल मनोरंजन में समय बिताएंगे तो उनका भविष्य प्रभावित होगा, लेकिन यदि वे केवल पढ़ाई में डूब जाएंगे तो उनका मानसिक और सामाजिक विकास रुक सकता है। इसलिए दोनों के बीच सामंजस्य आवश्यक है।

समय प्रबंधन इस संतुलन की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है। जो विद्यार्थी अपने दिनचर्या को सही ढंग से व्यवस्थित करते हैं, वे पढ़ाई के साथ-साथ अपने शौक और आराम के लिए भी समय निकाल लेते हैं। पढ़ाई के लिए निश्चित समय तय करना, छोटे-छोटे लक्ष्य बनाना और बीच-बीच में विश्राम लेना मानसिक थकान को कम करता है। लगातार घंटों तक पढ़ने से अधिक प्रभावी है कि विद्यार्थी एकाग्रता के साथ सीमित समय पढ़ें और फिर कुछ समय आराम, व्यायाम या मनोरंजन के लिए निकालें।

खेल और शारीरिक गतिविधियों का भी विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। खेल केवल शरीर को स्वस्थ नहीं रखते, बल्कि आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना भी विकसित करते हैं। मैदान में खेलने वाला बच्चा जीवन की हार-जीत को बेहतर ढंग से समझता है। आज कई विद्यार्थी मोबाइल और कंप्यूटर के कारण शारीरिक गतिविधियों से दूर हो रहे हैं, जिसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। मोटापा, आंखों की कमजोरी, नींद की समस्या और मानसिक तनाव जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। यदि विद्यार्थी प्रतिदिन कुछ समय खेल, योग या व्यायाम को दें तो उनका मन और शरीर दोनों स्वस्थ रहेंगे।

परिवार के साथ समय बिताना भी जीवन के संतुलन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज की व्यस्त दिनचर्या में कई विद्यार्थी अपने माता-पिता और दादा-दादी से खुलकर बात तक नहीं कर पाते। परिवार भावनात्मक सुरक्षा देता है। जब विद्यार्थी अपने मन की बातें परिवार से साझा करते हैं तो उनका तनाव कम होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। माता-पिता को भी चाहिए कि वे बच्चों पर केवल अंकों का दबाव न डालें, बल्कि उनकी भावनाओं और रुचियों को समझें। हर बच्चा डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन सकता, लेकिन हर बच्चा किसी-न-किसी क्षेत्र में विशेष प्रतिभा रखता है। उस प्रतिभा को पहचानना और प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

कला, संगीत, साहित्य और रचनात्मक गतिविधियां भी विद्यार्थियों के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चित्रकारी, लेखन, नृत्य, गायन या पुस्तक पढ़ना मन को शांति देता है और कल्पनाशक्ति को बढ़ाता है। कई महान वैज्ञानिक, लेखक और खिलाड़ी अपने जीवन में किसी न किसी रचनात्मक गतिविधि से जुड़े रहे हैं। इससे उनका मानसिक संतुलन बना रहा और वे अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सके।

डिजिटल युग में संतुलन बनाए रखना और भी कठिन हो गया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने जानकारी के अनेक द्वार खोले हैं, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग ने विद्यार्थियों का ध्यान भटकाना भी शुरू कर दिया है। कई घंटे मोबाइल पर बिताने के बाद विद्यार्थी मानसिक रूप से थका हुआ महसूस करते हैं। इसलिए डिजिटल अनुशासन भी जरूरी है। मोबाइल और सोशल मीडिया का उपयोग सीमित और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। पढ़ाई के समय नोटिफिकेशन बंद रखना और स्क्रीन टाइम को नियंत्रित करना एक अच्छी आदत हो सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि विद्यार्थी लगातार तनाव, चिंता या उदासी महसूस करें तो उन्हें अपनी समस्या किसी विश्वसनीय व्यक्ति से साझा करनी चाहिए। जीवन में असफलता अंत नहीं होती। परीक्षा में कम अंक आना या किसी प्रतियोगिता में पीछे रह जाना जीवन की हार नहीं है। इतिहास गवाह है कि कई सफल लोगों ने अपने जीवन में असफलताओं का सामना किया, लेकिन उन्होंने संतुलन और आत्मविश्वास बनाए रखा।

शिक्षा व्यवस्था को भी इस दिशा में बदलाव की जरूरत है। स्कूलों और कॉलेजों को केवल परीक्षा केंद्रित शिक्षा देने के बजाय विद्यार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान देना चाहिए। पाठ्यक्रम में खेल, कला, नैतिक शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य को पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए। यदि शिक्षा केवल अंक प्राप्त करने की प्रक्रिया बनकर रह जाएगी, तो विद्यार्थी जीवन का वास्तविक आनंद खो देंगे।

समाज को भी सफलता की परिभाषा बदलनी होगी। केवल ऊंचे वेतन या बड़े पद को ही सफलता मानना उचित नहीं है। एक खुश, स्वस्थ, संवेदनशील और संतुलित व्यक्ति ही वास्तव में सफल कहा जा सकता है। जीवन में खुशी, मानसिक शांति, अच्छे संबंध और आत्मसंतोष भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने करियर और आर्थिक उपलब्धियां।

अंत में कहा जा सकता है कि पढ़ाई और जीवन के बीच संतुलन बनाना आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। शिक्षा हमें आगे बढ़ने की शक्ति देती है, लेकिन जीवन हमें जीने का अर्थ सिखाता है। यदि विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य, परिवार, मित्रों, शौक और मानसिक शांति का भी ध्यान रखें, तो वे न केवल अच्छे विद्यार्थी बनेंगे बल्कि बेहतर इंसान भी बन पाएंगे। जीवन की असली सफलता केवल डिग्री प्राप्त करने में नहीं, बल्कि मुस्कुराते हुए, स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने में छिपी होती है।

नीट-यूजी ऑनलाइनः भारत ने इतनी देर तक इंतज़ार क्यों किया?

डॉ विजय गर्ग

एक ऐतिहासिक संकट और डिजिटल परिवर्तन की मजबूरी

वर्ष 2026 में नीट-यूजी परीक्षा के आयोजन के तुरंत बाद सामने आए देशव्यापी पेपर लीक और ₹गेस पेपर₹ विवाद ने भारत की चिकित्सा शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता को हिलाकर रख दिया है। 3 मई 2026 को आयोजित हुई परीक्षा को बड़े पैमाने पर हुई धांधली के कारण इतिहास में पहली बार पूरी तरह से रद्द करना पड़ा, जिसने 22 लाख से अधिक छात्रों के भविष्य को अधर में लटका दिया। इस अभूतपूर्व संकट के बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने घोषणा की है कि *नीट-यूजी परीक्षा को पूरी तरह से कंप्यूटर आधारित टेस्ट यानी ऑनलाइन मोड में स्थानांतरित किया जाएगा।*

यह घोषणा एक बड़े नीतिगत बदलाव का संकेत देती है, लेकिन इसके साथ ही देश के लाखों छात्रों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं के मन में एक गंभीर यक्ष-प्रश्न खड़ा हो गया हैः *जब देश में जेईई और कैट जैसी बड़ी परीक्षाएं वर्षों से सुरक्षित रूप से ऑनलाइन आयोजित की जा रही हैं, और यह साबित हो चुका है कि डिजिटल मोड भौतिक पेपर लीक के खिलाफ एक अचूक ढाल है, तो भारत ने देश की सबसे बड़ी प्रवेश परीक्षा को ऑनलाइन करने के लिए इतना लंबा इंतज़ार क्यों किया?*

इस अत्यधिक विलंब के पीछे कोई प्रशासनिक सुस्ती नहीं थी, बल्कि इसके पीछे जटिल बुनियादी ढांचागत चुनौतियां, कानूनी पेंच, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं और सांख्यिकीय पेचीदगियां थीं, जिन्होंने सरकार के हाथ बांध रखे थे। आइए इस विस्तृत लेख में उन मुख्य कारणों का विश्लेषण करें जिनके कारण नीट-यूजी को ऑनलाइन करने की राह में रोड़े अटके रहे।

1. 'नॉर्मलाइजेशन' (प्रसामान्यीकरण) और मेडिकल सीटों की क्रूर प्रतिस्पर्धा

नीट-यूजी को ऑनलाइन मोड में न ले जाने का सबसे बड़ा तकनीकी और मनोवैज्ञानिक कारण 'नॉर्मलाइजेशन' की प्रक्रिया रही है।

* *मल्टी-शिफ्ट का गणितः* भारत में मौजूदा डिजिटल बुनियादी ढांचे के अनुसार, 22 से 25 लाख छात्रों की परीक्षा एक ही दिन और एक ही शिफ्ट में ऑनलाइन कराना असंभव है। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के अनुसार, वर्तमान में एक शिफ्ट में अधिकतम 1.5 लाख छात्र ही ऑनलाइन परीक्षा दे सकते हैं। इसका मतलब है कि नीट को ऑनलाइन कराने के लिए परीक्षा को कम से कम 15 से 20 शिफ्टों में, कई दिनों तक आयोजित करना होगा।

* *कठिनाई स्तर का अंतरः* जब परीक्षा कई शिफ्टों में होगी, तो हर शिफ्ट का प्रश्नपत्र अलग होगा। कोई पेपर आसान होगा तो कोई बेहद कठिन। इस अंतर को पाटने के लिए सांख्यिकीय फॉर्मूले (नॉर्मलाइजेशन) का उपयोग किया जाता हैः

* *मेडिकल बनाम इंजीनियरिंग का अंतरः* इंजीनियरिंग (जेईई) में छात्र नॉर्मलाइजेशन को स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वहां आईआईटी, एनआईटी और सैकड़ों निजी कॉलेजों में लाखों सीटें उपलब्ध हैं। लेकिन मेडिकल (एमबीबीएस) में लड़ाई अलग है। यहां एक-एक नंबर या डेसिमल (0.001) पॉइंट के अंतर से छात्र एक किफायती सरकारी मेडिकल कॉलेज की सीट से चूक जाता है और सीधे करोड़ों रुपये की फीस वाले निजी कॉलेज के पायदान पर आ गिरता है।

* *स्वास्थ्य मंत्रालय का कड़ा रुखः* केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और नेशनल मेडिकल कमीशन ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि चिकित्सा चयन में पूर्ण निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए 'एक देश, एक पेपर, एक शिफ्ट' का सिद्धांत ही लागू रहना चाहिए। स्वास्थ्य मंत्रालय का मानना था कि नॉर्मलाइजेशन लागू होने से अदालती मुकदमों की बाढ़ आ जाएगी, जहां छात्र यह दावा करेंगे कि उनके शिफ्ट का पेपर कठिन था और

सांख्यिकीय फॉर्मूले ने उनके साथ अन्याय किया।

2. ग्रामीण-शहरी डिजिटल विभाजनः

भारत एक ऐसा देश है जहां की आत्मा गांवों में बसती है, और नीट-यूजी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों का एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आता है।

* *कंप्यूटर साक्षरता और मनोवैज्ञानिक दबावः* महानगरीय शहरों के छात्र बचपन से कंप्यूटर, ऑनलाइन मॉक टेस्ट और डिजिटल इंटरफेस के आदी होते हैं। इसके विपरीत, सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कई मेधावी छात्रों ने कभी माउस पकड़कर स्क्रीन पर टाइमर के टिक-टिक करते दबाव के बीच परीक्षा नहीं दी होती है। कंप्यूटर-आधारित टेस्ट मोड अचानक लागू करने से ग्रामीण छात्रों में एक अनजाना डर पैदा होने का जोखिम था, जो उनकी योग्यता के बजाय उनकी तकनीकी अनभिज्ञता के कारण उन्हें पीछे धकेल देता।

* *हब-एंड-स्पोक समस्याः* पारंपरिक पेन-एंड-पेपर परीक्षा देश के लगभग हर जिले के स्थानीय सरकारी और निजी स्कूलों में आयोजित की जा सकती है। इसके विपरीत, ऑनलाइन परीक्षा के लिए हाई-स्पीड इंटरनेट, निर्बाध बिजली आपूर्ति, स्थानीय सर्वर और तकनीकी जनशक्ति से लैस विशेष डिजिटल केंद्रों की आवश्यकता होती है। यदि नीट पूरी तरह ऑनलाइन होता है, तो ग्रामीण क्षेत्रों के परीक्षा केंद्र समाप्त हो जाएंगे। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के छात्रों को परीक्षा देने के लिए सैकड़ों किलोमीटर दूर टियर-1 या टियर-2 शहरों की यात्रा करनी होगी, जो उनके परिवारों पर भारी वित्तीय बोझ डालता है।

3. बुनियादी ढांचे की भारी कमी और बड़े पैमाने का संकट

नीट-यूजी परीक्षा का पैमाना ःइतना विशाल है कि इसकी तुलना दुनिया की किसी भी अन्य एकल-दिवसीय प्रवेश परीक्षा से नहीं की जा सकती।

| परीक्षा का नाम | उम्मीदवारों की अनुमानित संख्या | परीक्षा का प्रारूप | दिनों की संख्या |

नीट-यूजी के लिए 25 लाख कंप्यूटर टर्मिनलों को एक साथ एक ही समय पर सुरक्षित नेटवर्क से जोड़ना वर्तमान में भारत के तकनीकी बुनियादी ढांचे की क्षमता से परे है। इसके अतिरिक्त, एनटीए को अक्सर परीक्षा आयोजित करने के लिए निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों और कंप्यूटर सेंटरों को आउटसोर्स करना पड़ता है। इन निजी केंद्रों की तकनीकी गुणवत्ता, सर्वर की सुरक्षा और बिजली के पुख्ता इंतजामों पर हमेशा पूरी तरह भरोसा नहीं किया जा सकता।

4. साइबर सुरक्षा और आधुनिक डिजिटल सिंडिकेट का डर

यह सोचना एक भ्रम है कि परीक्षा को ऑनलाइन कर देने से धांधली पूरी तरह खत्म हो जाती है। नीति निर्माताओं के मन में यह डर भी था कि ऑफलाइन पेपर लीक को रोकने के चक्कर में वे परीक्षा को और अधिक खतरनाक 'डिजिटल माफिया' के हाथों में न सौंप दें। हाल के वर्षों में कई ऑनलाइन सरकारी परीक्षाओं में निम्नलिखित हाई-टेक धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैंः

* *रिमोट एक्सेस हैकिंगः* इसमें परीक्षा केंद्र के कुछ भ्रष्ट कर्मचारी मिलकर उम्मीदवार के कंप्यूटर का नियंत्रण 'एनीडेस्क' या 'अल्ट्राव्यूअर' जैसे सॉफ्टवेयर के जरिए परीक्षा केंद्र के बाहर बैठे किसी सॉल्वर को सौंप देते हैं। छात्र केवल स्क्रीन के सामने बैठता है, जबकि प्रश्न कोई और हल कर रहा होता है।

* *लोकल सर्वर मैनिपुलेशनः* परीक्षा केंद्रों के मुख्य सर्वर को हैक करके परीक्षा शुरू होने से कुछ मिनट पहले प्रश्नपत्र डाउनलोड कर लेना या उत्तरों में हेरफेर करना आसान हो जाता है, जिसे भौतिक रूप से पकड़ना बेहद मुश्किल होता है।

एनटीए के पास इन डिजिटल सेंधमारों से निपटने के लिए एक मजबूत और समर्पित इन-हाउस साइबर सुरक्षा विंग की कमी रही है, जिसके कारण वे इस बड़े कदम को उठाने से हिचकिचाते रहे।

डॉ. के. राधाकृष्णन समिति की सिफारिशें और हाइब्रिड मॉडल का विकल्प

नीट-यूजी 2024 के विवाद के बाद, सरकार ने इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया था। इस समिति ने अक्टूबर 2024 में ही अपनी रिपोर्ट सौंप दी थी, जिसमें उन्होंने एनटीए के ढांचे में आमूलचूल बदलाव और हाई-टेक उपायों की वकालत की थी।

समिति की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित थींः

1. *परीक्षा का डिजिटलीकरणः* भौतिक पेपरों की छपाई और परिवहन को पूरी तरह बंद किया जाए क्योंकि ये सबसे कमजोर कड़ियां पेपर लीक हैं।

2. *डिजी-एग्जाम प्रणालीः* आधार-लिंक्ड प्रमाणीकरण, बायोमेट्रिक उपस्थिति और एआई-संचालित पहचान सत्यापन का उपयोग।

3. *हाइब्रिड परीक्षा मॉडलः* पूरी तरह ऑनलाइन मोड में जाने से पहले आ रहे बुनियादी ढांचे के संकट को देखते हुए समिति ने *'कंप्यूटर-असिस्टेड सिक्योर पेपर-बेस्ड टेस्टिंग' * का सुझाव दिया था।

अंतर को समझेंः पारंपरिक, हाइब्रिड और पूरी तरह ऑनलाइन मॉडल

चूंकि सरकार अब 2027 से पूरी तरह सीबीटी मोड अपनाने की दिशा में कदम बढ़ा रही है, तब तक के लिए हाइब्रिड मॉडल को एक सुरक्षित मध्य मार्ग के रूप में देखा जा रहा हैः

* *पारंपरिक ओएमआर मॉडलः* प्रश्नपत्र हफ्तों पहले प्रिंटिंग प्रेस में छपते हैं, ट्रकों और ट्रेनों के माध्यम से बैंक के स्ट्रांग-रूम तक भेजे जाते हैं। (लीक होने का जोखिमः *अत्यधिक उच्च*)।

* *हाइब्रिड मॉडलः* कोई भी पेपर पहले से प्रिंट नहीं होता। परीक्षा शुरू होने से ठीक 30-45 मिनट पहले, एक अत्यधिक सुरक्षित, एनक्रिप्टेड डिजिटल फाइल परीक्षा केंद्रों के सर्वर पर भेजी जाती है। केंद्र पर लगे हाई-स्पीड प्रिंटर तुरंत छात्रों के सामने पेपर प्रिंट करते हैं और छात्र उसे ओएमआर शीट पर हल करते हैं। (लीक होने का जोखिमः *नगण्य*, क्योंकि परिवहन की कड़ियां समाप्त हो जाती हैं)।

* *पूर्ण ऑनलाइन मॉडलः* कागज का नामोनिशान नहीं होता। प्रश्न सीधे कंप्यूटर मॉनिटर पर दिखते हैं और माउस से क्लिक करके उत्तर देने होते हैं। (लीक होने का जोखिमः *न्यूनतम भौतिक लीक*, लेकिन साइबर सुरक्षा पर निर्भर)।

निष्कर्षः छात्रों का टूटता भरोसा और भविष्य की राह

नीट-यूजी परीक्षा को ऑनलाइन करने में हुआ लंबा इंतज़ार असल में *'समानता' * और *'सुरक्षा' * के बीच का एक अंतहीन संघर्ष था। सरकार ग्रामीण छात्रों के हितों की रक्षा और नॉर्मलाइजेशन के कानूनी विवादों से बचने के लिए परीक्षा को ऑफलाइन मोड में खींचती रही। लेकिन 2026 में हुए इस ऐतिहासिक पेपर लीक ने यह साबित कर दिया कि पुरानी कागजी व्यवस्था के सुरक्षा लूपहोल्स अब इतने बड़े हो चुके हैं कि उनके साथ परीक्षा की पवित्रता बनाए रखना असंभव है।

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा परीक्षा अवधि में 15 मिनट की बढ़ोतरी करने और आगामी वर्षों में इसे पूरी तरह सीबीटी मोड में बदलने का निर्णय देर से उठाया गया, लेकिन अनिवार्य कदम है। अब सरकार और एनटीए के सामने सबसे बड़ी चुनौती केवल तकनीक को बदलना नहीं है, बल्कि देश के 22 लाख से अधिक चिकित्सा उम्मीदवारों के मन में व्यवस्था के प्रति *'विश्वास' * को फिर से बहाल करना है। डिजिटल संक्रमण के इस दौर में यह सुनिश्चित करना होगा कि देश के आखिरी पायदान पर खड़ा छात्र भी इस बदलाव के कारण खुद को रेस से बाहर न महसूस करे।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त

आस्था, अखंड सौभाग्य और परंपरा का पर्व : राउरकेला में श्रद्धा के साथ मनाया गया वट सावित्री पूजा

लाल चुनरी और पारंपरिक वेशभूषा में सजी महिलाओं ने बरगद वृक्ष की पूजा कर पति की दीर्घायु और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की

शहर के मंदिरों में सुबह से उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, वैदिक मंत्रोच्चार और सावित्री कथा से भक्तिमय हुआ वातावरण

राउरकेला, 16 मईः वट सावित्री पूजा के पावन अवसर पर शनिवार को राउरकेला शहर श्रद्धा, आस्था और पारंपरिक उत्साह से सराबोर नजर आया। विवाहित महिलाओं ने पति की लंबी आयु, परिवार की सुख-समृद्धि और वैवाहिक जीवन की मंगलकामना के लिए पूरे विधि-विधान और श्रद्धा के साथ वट सावित्री व्रत एवं पूजा-अर्चना की। लाल साड़ी और लाल चुनरी में सजी महिलाएं सुबह से ही शहर के विभिन्न मंदिरों और बरगद वृक्षों के समीप बड़ी संख्या में एकत्रित होकर पूजा-अनुष्ठान में शामिल हुईं।

रेलवे कॉलोनी स्थित काली मंदिर परिसर में सुबह से ही श्रद्धालु महिलाओं की भारी भीड़ देखने को मिली। महिलाओं ने बरगद वृक्ष की पूजा कर उसके चारों ओर पवित्र लाल धागा बांधा तथा वैदिक रीति-रिवाजों के अनुसार पूजा-अर्चना की। मंदिर के पुजारी ने विधिवत पूजा संपन्न कराई तथा भक्त महिलाओं को माता सावित्री की पौराणिक कथा का श्रवण कराया। कथा के दौरान पूरा वातावरण भक्तिमय और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत हो उठा।

पूजा के दौरान महिलाओं ने फल, फूल, साड़ी, पारंपरिक हाथ पंखा तथा अन्य पूजन सामग्रियां अर्पित कर परिवार के सुख, शांति और समृद्धि की प्रार्थना की। मंदिर परिसर सुबह से दोपहर तक श्रद्धालुओं की भीड़ से भरा रहा और महिलाओं ने अत्यंत उत्साह एवं श्रद्धा के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया।

इसी प्रकार बसंती कॉलोनी स्थित बरफ फैक्ट्री चौक के निकट राधा-कृष्ण मंदिर में भी बड़ी संख्या में विवाहित महिलाएं वट सावित्री पूजा के लिए एकत्रित हुईं। मंदिर परिसर में सावित्री कथा के वाचन और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूरा वातावरण भक्तिरस में डूबा नजर आया।

शहर के अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों पर भी वट सावित्री पूजा को लेकर विशेष उत्साह देखने को मिला। हनुमान वाटिका, तारिणी मंदिर, पाँपोष काली मंदिर, धलेश्वर शिव मंदिर, संकट मोचन मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, माँ मंगला मंदिर, श्याम मंदिर तथा मनोकामना सिद्धि हनुमान मंदिर समेत कई मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति रही।

वट सावित्री पूजा के अवसर पर पूरे राउरकेला में पारंपरिक संस्कृति, वैवाहिक आस्था और धार्मिक श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिला। महिलाओं ने पूरे विश्वास और समर्पण के साथ पूजा कर अपने परिवार की खुशहाली, शांति और अखंड सौभाग्य की कामना की।

सादगी का संदेश ऊपर से, सायरन का प्रदर्शन नीचे !

पीएम मोदी और मुख्यमंत्री माझी ने दिया ईंधन बचत व सादगी का संदेश, झारसुगुड़ा विधायक के भारी पुलिस काफिले पर उठे सवाल

जनता पूछ रही — यह सुरक्षा है, शक्ति प्रदर्शन है या फिर वीआईपी संस्कृति का नया संस्करण?

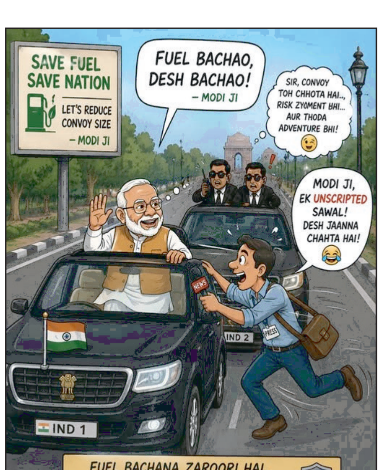

झारसुगुड़ा, ओडिशाः देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा हाल ही में देशवासियों से ईंधन की बचत करने, अनावश्यक वीआईपी संस्कृति से दूरी बनाने और सार्वजनिक जीवन में सादगी अपनाने की अपील की गई थी। स्वयं प्रधानमंत्री ने अपने सीमित काफिले और सादगीपूर्ण सार्वजनिक व्यवहार के माध्यम से इसका संदेश भी दिया। इसके बाद कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी इस पहल का समर्थन करते हुए सार्वजनिक जीवन में संयम और सादगी को प्राथमिकता दी। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने भी हाल के कार्यक्रमों में सादगीपूर्ण उपस्थिति दर्ज कर इस संदेश को मजबूती देने का प्रयास किया।

लेकिन इसी बीच झारसुगुड़ा विधायक टंकधर त्रिपाठी लगातार भारी पुलिस काफिले के साथ जिले में घूमते नजर आ रहे हैं, जिससे अब राजनीतिक और सार्वजनिक स्तर पर सवाल खड़े होने लगे हैं। आम लोगों के बीच चर्चा है कि जब देश का सर्वोच्च नेतृत्व सादगी, ईंधन बचत और दिखावे से दूरी बनाने की बात कर रहा है, तब स्थानीय स्तर पर इतने बड़े काफिले के साथ शक्ति प्रदर्शन आखिर किस मानसिकता को दर्शाता है।

जनता का सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर किस सरकारी प्रोटोकॉल के तहत एक विधायक को इतने बड़े पुलिस काफिले की अनुमति दी गई है? क्या ओडिशा के सभी विधायकों को ऐसी सुविधाएं उपलब्ध हैं, या फिर यह केवल राजनीतिक प्रभाव और शक्ति प्रदर्शन का माध्यम बन चुका है? लोग पूछ रहे हैं कि यह सुरक्षा का विषय है या फिर जनता से दूरी बनाकर वीआईपी संस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रयास।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि लोकतंत्र में नेता की पहचान उसके पीछे चल रही गाड़ियों की संख्या से नहीं, बल्कि उसके आचरण, सादगी और जनता के प्रति जवाबदेही से होती है। ऐसे समय में जब आम नागरिकों से पेट्रोल-डीजल बचाने, सरकारी खर्चों में कटौती करने और सादगी अपनाने की अपील की जा रही है, तब लंबे पुलिस काफिले जनता के बीच विरोधाभासी संदेश भेज रहे हैं।

राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी तेज हो गई है कि क्या विधायक अपने ही दल के शीर्ष नेतृत्व के संदेश से अनजान हैं या फिर जानबूझकर उसे नजरअंदाज कर रहे हैं। हाल ही में सज्जन सिंह वर्मा से जुड़े वीआईपी संस्कृति और सार्वजनिक संदेशों की अवहेलना के मुद्दों पर राष्ट्रीय स्तर पर बहस हुई थी, जहां राजनीतिक जवाबदेही की मांग भी उठी थी।

अब ओडिशा में भी लोग जानना चाहते हैं कि क्या भारतीय जनता पार्टी का प्रदेश नेतृत्व इस मामले में समान मानदंड अपनाएगा? क्या पार्टी संगठन, प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री इस विषय पर कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया देंगे, या फिर चुप्पी को ही आधिकारिक रुख माना जाएगा?

जनता का कहना है कि वास्तविक जननेता वह होता है जो जनता के बीच बिना दिखावे के पहुंचे, न कि सायरन और दर्जनों वाहनों के बीच। लोकतंत्र में सम्मान सुरक्षा घेरों से नहीं, बल्कि जनविश्वास और सादगी से मिलता है।

और अब कॉरपोरेट जिहाद : आखिर नफरत की आग कब बुझेगी?

(आलेख : राम पुनियानी, अनुवाद : अमरीश हरदेनिया)

हाल में महाराष्ट्र का नासिक शहर दो बार अखबारों की सुर्खियों में रहा। पहली बार अशोक खरात के मामले को लेकर, जो एक ढोंगी बाबा था और महिलाओं, खासकर समाज के उच्च वर्ग की महिलाओं, का यौन शोषण करता था। उसने अपनी छवि एक चमत्कारी बाबा की बनाने के लिए कुछ नए तरीके अपनाए। वह लोगों को उनका अतीत, वर्तमान और भविष्य बताकर प्रभावित करता था। वह महिलाओं को ब्रेन वाश कर उन्हें अपना अनुयायी बनाता था और उन्हें अपना सब कुछ उसे समर्पित कर देने के लिए राजी कर अपनी शारीरिक भूख मिटाता था। उसने सांप और अन्य जंगली जानवर पाले हुए थे और वह इन जानवरों से महिलाओं को डराकर उन्हें अपनी बात मानने के लिए मजबूर करता था। अंधश्रद्धा के इसी क्रम में धीरेन्द्र शास्त्री, जिन्हें बागेश्वर धाम बाबा के नाम से जाना जाता है, से भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई, मिलने गए। यहां यह बताना प्रासंगिक होगा कि गवई यह दावा करते हैं कि वे डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के अनुयायी हैं। अम्बेडकर केवल और केवल तार्किकता में विश्वास रखते थे।

इस मामले को मीडिया ने थोड़ा-बहुत कवर किया और बजरंग दल और उसके जैसे अन्य संगठन चुप्पी साधे रहे क्योंकि यह एक हिन्दू बाबा द्वारा हिन्दू महिलाओं के दैहिक शोषण का मामला था और चूंकि इसमें कोई मुसलमान शामिल नहीं था। लेकिन इसके कुछ ही दिनों बाद नफरती तत्वों को इसी नासिक से नफरत की आग भड़काने के लिए पुलिस की एक रिपोर्ट के रूप में भरपूर ईंधन मिल गया। इस रपट में एक हिंदू लड़की ने दावा किया था कि एक मुस्लिम कर्मचारी उसका यौन शोषण कर रहा है। इस मुस्लिम कर्मचारी का इस लड़की से अफेयर चल रहा था और लड़की के मुताबिक उस मुस्लिम युवक ने उससे शादी करने का वादा किया था, किंतु बाद में वह मुकर गया। पुलिस को की गई इस शिकायत से पुलिस और हिन्दुत्ववादी तत्वों को सक्रिय होने का अवसर मिल गया और पुलिस की एक गोपनीय कार्यवाही शुरू हुई।

पुलिस की जांच, जिसकी सराहना राज्य के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस तक ने की, के अनुसार टाटा कन्सलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) में धर्म परिवर्तन कराने की एक योजनाबद्ध साजिश को अमल में लाया जा रहा था। कुछ मुस्लिम कर्मचारी (जिनकी संख्या सात थी), हिंदू कर्मचारियों को लालच देकर और डरा-धमका कर उनसे नमाज पढ़वाने और उन्हें गौमांस खिलाने का अभियान चला रहे थे। इस मामले से जुड़ी खबरें मीडिया में छाई हुई हैं और एक नया शब्द 'कॉरपोरेट जिहाद' गढ़ लिया गया है। इससे आशय यह है कि बड़ी कंपनियों में मुस्लिम कर्मचारी लव जिहाद और धर्म परिवर्तन में जुटे हुए हैं। टीसीएस ने सभी आरोपी कर्मचारियों को निलंबित कर दिया और कहा कि कदाचार को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। टाटा सन्स के प्रमुख एन. चन्द्रशेखरन ने इन आरोपों को 'अत्यंत चिंताजनक' बताया।

'सिटीजन्स कमेटी, मुंबई (एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राईट्स और पीयूसीएल की संयुक्त समिति), निरंजन टाकले और अन्य ने इस मामले की जांच-पड़ताल की। जांच पूरी होने के बाद उन्होंने मुंबई में एक पत्रकार वार्ता का आयोजन किया। टाकले ने बताया कि पुलिस की जांच में कई गड़बड़ियां और कमियां हैं। पहली, यह कि निदा खान, जो एचआर विभाग की प्रमुख थी, महिला कर्मचारियों को मजबूर करके अपना शिकार बनाती थी। सच यह है कि निदा खान एचआर विभाग की प्रमुख नहीं, बल्कि मात्र एक टेलिकॉलर थी। यह दावा कि इस साजिश पर पिछले चार सालों से अमल किया जा रहा था, बिल्कुल गलत है, क्योंकि टीसीएस के नासिक कार्यालय से धर्म परिवर्तन कर इस्लाम स्वीकार करने का एक भी मामला सामने नहीं आया है। धर्म परिवर्तन की एक घटना जरूर हुई है, जिसमें जहाना नाम की एक ईसाई लड़की ने हिंदू धर्म ग्रहण किया है।

समिति ने इस आरोप को भी खारिज कर दिया कि जिन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, वे अन्य लोगों को जबरदस्ती गौमांस खिलाते थे। क्या यह मुमकिन है कि थोड़े से कर्मचारी अन्य कर्मचारियों को, जिनकी संख्या उनसे कई गुना अधिक है, को कुछ भी खाने के लिए मजबूर कर सकें। इसके अलावा मुख्य आरोपी दानिश शेख पर दुष्कर्म और उस लड़की से अपनी वैवाहिक स्थिति छिपाने का जो आरोप लगाया गया है, वह भी सच नहीं लगता, क्योंकि दानिश की पत्नी और तथाकथित पीड़ति लड़की के बीच व्हाटसएप पर संदेशों का आदान-प्रदान होता रहता था। साथ ही यह लड़की दानिश के साथ मोटरसाईकिल पर नासिक से 27 किलोमीटर दूर पर्यटन स्थल त्रयंबकेश्वर गई थी।

यह सवाल किए जाने पर कि मुस्लिम कर्मचारियों की छवि बिगाड़ने की इस योजना का उद्देश्य क्या है, टाकले ने कहा कि ऐसा लगता है कि इसका उद्देश्य सभी मुसलमानों के प्रति नफरत बढ़ाना था। पत्रकार वार्ता में मौजूद तीस्ता सीतलवाड, जो मानवाधिकारों और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए अथक प्रयास करती रहती हैं, ने कहा कि ऐसा लगता है कि यह सुनिश्चित करने का योजनाबद्ध प्रयास किया जा रहा है कि कंपनियां शिक्षित मुस्लिम युवाओं को नौकरी न दें। यह शिक्षित मुसलमानों पर उन्हें बदनाम करने के उद्देश्य से किया गया हमला है। इस पूरे मामले को सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा इन दो लक्ष्यों की पूर्ति के लिए उठाया गया है।

समिति के सदस्यों ने इस ओर भी ध्यान दिलाया कि मीडिया द्वारा तथ्यों की पुष्टि किए बिना दहशत पैदा करने का यह काम बहुत परेशान करने वाला है। निदा खान, जिसे इस पूरी साजिश का मुख्य पात्र बताया जा रहा है, , कई महीने पहले मुंबई कार्यालय में स्थानांतरण हो चुका था, जहां वह अपने परिवार के साथ रह रही थी।

'हिंदू खतरे में हैं' की धारणा को एक बार फिर खाद-पानी दिया जा रहा है। धर्म परिवर्तन और लव जिहाद का प्रोपेगेंडा इसके मुख्य हथियार नजर आ रहे हैं। इसके साथ ही इसका उद्देश्य टीसीएस जैसी कंपनियों में मुसलमानों को रोजगार मिलने की संभावना को कम करना भी है। यौन उत्पीड़न की घटनाओं के संबंध में अशोक खरात के मामले को दबाने और दानिश के मामले को बढ़ा-चढ़ाकर, झूठ का सहारा लेकर, उछालने का मीडिया का यह रवैया अत्यंत निंदनीय है।

हम यहां से किस तरफ जाएंगे? सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा गढ़ा गया आख्यान कुछ ही घंटों में समाज को जकड़ लेता है, जबकि पूरी सच्चाई सामने आने में कई दिन या हफ्ते लग जाते हैं। साम्प्रदायिक शक्तियों द्वारा स्थापित किया गया तंत्र, मीडिया की मदद और जांच एजेंसियों का पक्षपातपूर्ण रवैया एक खतरनाक मिश्रण है, जो नफरत बढ़ाता है और अल्पसंख्यक समुदाय को हाशिए की ओर धकेल देता है।

जहां तक लव जिहाद की बात है, यह बांटने वाली ताकतों के हाथ आया बहुत बड़ा हथियार है, जिसके जरिए वे हिंदू लड़कियों की आजादी पर तरह-तरह के प्रतिबंध लगाने में कामयाब हो रहे हैं। इस मामले में की गई गहन जांच-पड़तालों से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह कपोल कल्पित प्रोपेगेंडा के अलावा कुछ नहीं है। हादिया (धर्म परिवर्तन के पूर्व अखिला) के मामले सहित ऐसे ज्यादातर मामले, जो न्यायालयों तक पहुंचे, में यह साबित हुआ कि लड़कियों द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक, स्वेच्छा से फैसले लिए गए थे। 'केरला स्टोरी' फिल्म ने इस दिशा में प्रोपेंगेडा को आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका अदा की।

मुसलमान लव जिहाद और धर्मपरिवर्तन के जरिए अपनी जनसंख्या बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं, यह आरोप इतनी बार दुहराया गया है कि लोग इसे सुनते-सुनते ऊब गए हैं। यह हिंदू राष्ट्रवादियों द्वारा अत्यंत कुशलता पूर्वक चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा है, जिसके निशाने पर मुस्लिम समुदाय है। अब वे योजनाबद्ध तरीके से टीसीएस जैसे मामले उठाकर मुस्लिम युवकों के रोजगार हासिल करने की राह में बाधाएं खड़ी कर रहे हैं।

हमें याद है कि कोविड-19 महामारी के दौरान 'कोरोना जिहाद' जैसे शब्द गढ़े गए थे। उस समय यह प्रोपेगेंडा फैलाया गया था कि मुसलमान कोरोना फैला रहे हैं, इसलिए फेरी लगाकर सामान बेचने वाले मुसलमानों को कॉलोनियों में प्रवेश नहीं करने देना चाहिए। अब मुस्लिम दुकानदारों का बहिष्कार करने के आह्वान खुलेआम हो रहे हैं।

कई लोग यह दावा कर रहे हैं कि साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं में गिरावट आ रही है और पिछले कुछ वर्षों में कोई बड़ा साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ है। मगर हिंसा की छोटी-मोटी, विभिन्न इलाकों में छितरी हुई घटनाएं बड़ी संख्या में हो रही हैं, जो हिंसा का ही एक रूप हैं। यह कई स्वरूपों में हो रहा है और अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ नफरत फैलाई जा रही है। संबंधित संस्थानों को इस मामले की पूर्णतः सत्य और निष्पक्ष रपट जारी करनी चाहिए। टीसीएस जैसी कंपनियों को झूठे प्रोपेगेंडा का भंडाफोड़ करना चाहिए, झूठे आरोपों में फंसा दिए गए अपने निर्दोष कर्मचारियों की नौकरी बहाल करनी चाहिए और दोषियों को दंड दिलवाने में मदद करनी चाहिए।

(लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे और सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोसाइटी एंड सेक्युलरिज्म के अध्यक्ष हैं।)

झारखंड और कर्नाटक के बीच व्यापार सहयोग को लेकर अहम बैठक

झारखंड और बेल्लारी चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के बीच व्यापार और निवेश । महिला उद्यमिता विकास को लेकर बैठक

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, शुक्रवार को चेम्बर भवन में फेडरेशन ऑफ झारखंड चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज और बेल्लारी डिसट्रिक्ट चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, कर्नाटक के बीच व्यापार और निवेश की संभावनाओं को लेकर हुए एक अहम बैठक में उद्योग सचिव अरावा राजकमल ने कहा कि औद्योगिक दृष्टिकोण से झारखंड एक बेहद समृद्ध राज्य है। यहाँ विशाल खनिज संसाधन हैं और यह एक प्रमाणित औद्योगिक पावरहाउस रहा है। हमारे राज्य के भीतर की औद्योगिक इकाइयाँ इसके औद्योगिक कौशल का प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि बेल्लारी खनन, विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) और आईटी क्षेत्रों में अग्रणी है, और दोनों राज्यों के बीच आपसी सीखने और सहयोग के व्यापक अवसर हैं। उन्होंने देखा कि झारखंड चेम्बर ने राज्यों के बीच औद्योगिक संवाद को बढ़ावा देने की एक उत्कृष्ट परंपरा शुरू की है—एक ऐसी पहल जिसके निकट भविष्य में सकारात्मक परिणाम मिलने की उम्मीद है।

अरवा राजकमल ने आगे कहा कि झारखंड में उद्योग तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन राज्य के विकास को लेकर एक दूरदर्शी दृष्टिकोण रखते हैं। मुख्यमंत्री का दृष्टिकोण खनन क्षेत्र में खनिज खनन से लेकर हाई-एंड सॉल्यूशंस तक एक संपूर्ण मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) बनाने का है। मुख्यमंत्री का इसी तरह का दृष्टिकोण महिला उद्यमिता को आधारशिला बनाकर राज्य में कृषि और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को सकारात्मक रूप से बदलने का है। उन्होंने कहा कि राज्य में इको टूरिज्म, क्रिटिकल मिनरल्स (महत्वपूर्ण खनिज), टेक्सटाइल और रेडीमेड गारमेंट्स, फूड प्रोसेसिंग और सुपर फूड्स क्षेत्रों में जबरदस्त क्षमता है।

अंतिम हिंदू सम्राट, क्षत्रिय कुलभूषण सम्राट पृथ्वीराज चौहान की 860वीं जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई

परिवहन विशेष न्यूज

इन्दौर मध्यप्रदेश में आज दिनांक 16 मई 2026 को प्रीतम लाल दुआ सभागृह में अंतिम हिंदू सम्राट एवं क्षत्रिय कुलभूषण वीर शिरोमणि सम्राट पृथ्वीराज चौहान की 860वीं जयंती सर्व राजपूत समाज धार्मिक एवं परमार्थिक ट्रस्ट तथा राजपूत समाज के समस्त संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में श्रद्धा एवं गौरव के साथ मनाई गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सम्राट पृथ्वीराज चौहान के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इसके पश्चात उपस्थित अतिथियों एवं समाजजनों ने वीर सम्राट को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके शौर्य, पराक्रम एवं राष्ट्रभक्ति को नमन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पार्षद श्री राजू भदोरिया एवं पार्षद श्री अमित पटेल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजपूत समाज चेतना मंडल के राष्ट्रीय संयोजक श्री रतन सिंह राजपूत ने की। मंच पर मंडल अध्यक्ष श्री गजराज सिंह सोलंकी, श्री राष्ट्रीय क्षत्रिय महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठा. कुलदीप सिंह जादोन, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री राजपाल सिंह जोलाय, प्रदेश संगठन मंत्री श्री शंकर सिंह पंवार तथा प्रदेश उपाध्यक्ष युवा मोर्चा श्री विकास राणावत विशेष रूप से उपस्थित थे।

अपने उद्बोधन में वक्ताओं ने सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि पृथ्वीराज चौहान न केवल एक कुशल योद्धा थे, बल्कि न्यायप्रिय शासक और भारतीय संस्कृति के संरक्षक भी थे। तराइन के प्रथम युद्ध में उनकी वीरता आज भी प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा है। युवाओं को उनके आदर्शों पर चलकर समाज एवं राष्ट्र निर्माण में योगदान देना चाहिए।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में राजपूत समाज के गणमान्य नागरिक, मातृशक्ति एवं युवा उपस्थित रहे। समस्त उपस्थितजनों ने सम्राट पृथ्वीराज चौहान के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का सफल संचालन राजपूत समाज चेतना मंडल के राष्ट्रीय संयोजक श्री रतन सिंह राजपूत द्वारा किया गया। अंत में सर्व राजपूत धार्मिक एवं परमार्थिक ट्रस्ट के संयोजक श्री किशोर सिंह पंवार ने सभी अतिथियों, समाज बंधुओं एवं सहयोगकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक जिला हिसार का परीक्षा परिणाम रहा शानदार

हिसार/हरियाणा, नरेश गुणपाल

किसी भी व्यक्ति की मेहनत यदि सफलता के रूप में सामने आती है तो उसकी ख़ुशी, उत्साह और जोश देखते ही बनता है। ऐसी ही ख़ुशी और उत्साह दिखाई दिया पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालक जिला हिसार की छात्राओं के चेहरों पर जब 10वीं एवं 12वीं बोर्ड की परीक्षा का परिणाम उनके सामने आया। छात्राओं की वर्ष भर की अथक मेहनत सफलता के रूप में उन्हें मिली। विद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवन्वित किया। विद्यालय का परिणाम शत-प्रतिशत रहा तथा अनेक विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में स्थान प्राप्त कर सफलता हासिल की। विद्यालय ने शत-प्रतिशत परिणाम देकर क्षेत्र में अपनी शैक्षणिक श्रेष्टता को पुनः सिद्ध कर दिया है। विद्यालय में सत्र 2025-26 का 10वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में कुल विद्यार्थी - 80 उत्तीर्ण - 80 कुल मेरिट - 31 है तथा सत्र 2025-26 का 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में कुल विद्यार्थी - 75 उत्तीर्ण - 75 कुल मेरिट - 54 है।

10वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में तमन्ना पुत्री सुरेश कुमार ने 97.2% अंक हासिल करके प्रथम स्थान, वर्षा पुत्री महाबीर सिंह ने 95.2% अंक हासिल करके द्वितीय स्थान, अंजलि पुत्री कृष्ण कुमार ने 94% अंक हासिल करके तृतीय स्थान एवं दीक्षा पुत्री अमीन ने 92.8% अंक हासिल करके चतुर्थ स्थान हासिल किया है।

12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में आर्ट्स संकाय में तमन्ना पुत्री जवेन्द्र ने 92.6% अंक हासिल करके प्रथम स्थान, वर्षा पुत्री राजेराम ने 91.4% अंक हासिल करके द्वितीय स्थान एवं नियति शर्मा पुत्री संजय शर्मा ने 88.6% अंक हासिल करके तृतीय स्थान हासिल किया है तथा विज्ञान संकाय में प्रिया पुत्री दीपक शर्मा ने 95.2% अंक हासिल करके प्रथम स्थान, साक्षी पुत्री राजेश ने 94.6% अंक हासिल करके द्वितीय स्थान एवं खुशी पुत्री अशोक कुमार ने 89.4% अंक हासिल करके तृतीय स्थान हासिल किया हैं।

विद्यालय के प्राचार्य रमेश यादव ने अभिभावकों तथा अध्यापकों को इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक-हार्दिक शुकमनायें एवं बधाईयां दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की मेहनत, अध्यापकों के मार्गदर्शन तथा अभिभावकों के सहयोग से यह सफलता संभव हो पाई है। उन्होंने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें आगे भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर विद्यालय में ख़ुशी का माहौल देखने को मिला। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी विद्यालय का यह पूर्ण प्रयास रहेगा कि विद्यार्थियों को शैक्षणिक क्षेत्र में हर वो सुविधा प्रदान की जाए जिससे छात्र शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना तथा विद्यालय का नाम रोशन करें।

उर्जा संकट, मोदी अपील पर झारखंड के सभी जिला कोर्ट अब हाईब्रिड मोड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, ऊर्जा संकट और पीएम नरेंद्र मोदी की अपील पर झारखंड हाई कोर्ट ने राज्य की सभी जिला अदालतों को हाइब्रिड मोड में संचालित करने का निर्देश जारी किया है। हाई कोर्ट के महानिबंधक सत्यप्रकाश सिन्हा की ओर से इस संबंध में राज्य के सभी जिला एवं सत्र न्यायाधीशों तथा रांची के न्यायायुक्त को पत्र जारी कर कहा गया है कि मौजूदा ऊर्जा संकट को देखते हुए सभी न्यायालय तत्काल प्रभाव से हाइब्रिड मोड (भौतिक एवं आभासी) में काम करें। यह पहल हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस एमएस सोनक के निर्देश पर किया जा रहा है। फिलहाल हाई कोर्ट में ग्रीष्मकालीन अवकाश चल रहा है। आठ जून को हाई कोर्ट खुल रहा है। ऐसे में उस समय हाई कोर्ट में हाइब्रिड मोड में चलाने पर विचार किया जाएगा।

रजिस्ट्रार जनरल की ओर से जारी पत्र में कहा गया है कि वकील, पक्षकार और गवाह वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए अदालत में पेश हो सकते है

वर्चुअल सुनवाई के लिए झारखंड हाई कोर्ट की ओर से निर्धारित सभी नियमों, दिशा निर्देशों और एसओपी का पालन करना होगा। इस संबंध में हाई कोर्ट के सीपीसी की ओर से जारी पत्र का हवाला दिया गया है।

इसके अलावा, ईंधन संकट के मद्देनजर सभी न्यायिक अधिकारियों व कर्मचारियों को वाहन-साझाकरण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने को कहा गया है। इसके लिए सभी प्रधान जिला जजों को अपनी कोर्ट के न्यायिक अधिकारी और कर्मियों को साझा-वाहन से कोर्ट आने की सलाह देने को कहा गया है।

राज्य के सबसे बड़े उद्योग समुह इलाके में नशा उन्मूलन का महती कार्यक्रम

अध्यक्ष डिबार जोंकों ने ग्रामीण शिक्षा पर दिया जोर, कोलाविरा में छोटी बच्चियां उच्च शिक्षा की दिशा में प्रेरित हुई

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, नशे के आकंठ में डूबा जिला जहां अफीम खेती, ब्राउन सुगर अवैध व्यापार जैसे जघन्यतम अपराध से आये दिनों लैस माना जा रहा। जहां इलाका इन चीजों से अपना गौरवशाली अतीत को खो रहा। उसी जिला सरायकेला खरसावां के उत्क्रमित प्लस टू उच्च विधालय कोलाविरा में नशा मुक्ति को लेकर एक अभिनव प्रयास हुआ है। मिराकी एवं इंडियन रेडक्रास सोसायटी, सरायकेला की तरफ से इस आयोजन कार्यक्रम में जहां हजारों की संख्या में छात्र छात्राओं को शपथ दिलाई गयी वहीं कोल्हान रक्षा संघ आतिथी के रूप में पहुंचकर यहां चार चांद लगाया। जहां गोपाल अग्रवाल ने सदा के लिये नशा नहीं लेने का संकल्प लिया तो वहीं संघ के अध्यक्ष डिबार जोंकों, जो पहले प्रशासनिक पदाधिकारी एवं व्याख्याता

रहे उनसे प्रभावित होकर दो छोटी कन्याएं भविष्य में प्रोफेसर बनाने का प्रण किया, जो हर दिल को छू गया। झारखंड के इस इलाके के लिए यह प्रेरक प्रसंग रही है, जहां ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक स्तर बढ़ाने का खास जरूरत महसूस की जा रही है। इस कार्यक्रम में मिराका संस्थान की सचिव रिता पात्र, कोल्हान रक्षा संघ के अध्यक्ष डिबार जोंकों, रविंद्र मंडल, सुखदेव हेमरम, सचिव मानसिंह हेम्रम आदि ने बच्चों को नशे की लत में न पड़ने का महत्वपूर्ण व्याखान दिया जिसे सैकड़ों की संख्या में उपस्थित बालिकाओं ने ध्यान देकर सुना। रविंद्र मंडल इस इलाके में अच्छी पकड़ रखने के साथ अच्छे काम को अंजाम देते आ रहे हैं। पूर्व डीडीसी सह अध्यक्ष डिबार जोंकों ने कहा कि स्कूल के नजदीक शराब दूकान कदाचित होनी नहीं चाहिए। यह झारखंड में हर जगह देखा जा सकता है। रविंद्र मंडल ने औधौगिक शहर इलाके के निकट इस विधालय में नशा मुक्ति अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसे प्रशासन को सदैव अपनी सतर्कता बनाए रखना उचित है। सनद रहे कि यह वही जिला है जो नशे की खेती अवैध कारोबार के लिए देश में अच्छा खासा लोकप्रिय है पर इंडियन रेडक्रास सोसायटी, मिराकी संस्थान एवं कोल्हान रक्षा संघ ने एक मजबूत कार्य को अंजाम दिया है।

नेशनल प्रेसिडेंट श्री नितिन नवीन कल दो दिन के दौरे पर ओडिशा आएंगे

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: नेशनल प्रेसिडेंट का पद संभालने के बाद नितिन नवीन कल पहली बार ओडिशा आएंगे। नेशनल प्रेसिडेंट नितिन नवीन कल पैसेंजर प्लेन से भुवनेश्वर एयरपोर्ट पहुंचेंगे। मौजूदा ग्लोबल तेल संकट को देखते हुए और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बुलावे पर, नेशनल प्रेसिडेंट का बड़े धूमधाम से स्वागत किया जाएगा। माननीय प्रदेश अध्यक्ष, माननीय मुख्यमंत्री और दूसरे बड़े नेता एयरपोर्ट पर नेशनल प्रेसिडेंट का स्वागत करेंगे, ऐसा प्रदेश प्रवक्ता सुदीप्त रॉय ने बताया। नेशनल प्रेसिडेंट नितिन नवीन 18 तारीख (सोमवार) को स्टेट ऑफिस में होने वाली 'स्टेट कोर कमेटी' की मीटिंग में शामिल होंगे। इसके बाद, नेशनल प्रेसिडेंट नितिन नवीन खुर्दा जिले में IIT जटनी के पास एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल हेल्थ (AIPH) यूनिवर्सिटी कैंपस में भुवनेश्वर ऑर्गेनाइजेशनल डिस्ट्रिक्ट द्वारा लगाए जाने वाले डिस्ट्रिक्ट लेवल पंडित दीनदयाल प्रशिक्षण महाअभियान-2026 कैंप का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद, नेशनल प्रेसिडेंट नितिन नवीन पुरी जाएंगे, भगवान श्री जगन्नाथ के दर्शन करेंगे और महाप्रसाद में शामिल होंगे, श्री राय ने बताया।

नेशनल प्रेसिडेंट नितिन नवीन भुवनेश्वर लौटेंगे और दोपहर में स्टेट ऑफिस में होने वाली स्टेट सेक्रेटरी, मोर्चा प्रेसिडेंट मीटिंग और काउंसिल ऑफ मिनिस्टर्स मीटिंग में शामिल होंगे और सभी से मिलेंगे और चर्चा करेंगे।

नेशनल प्रेसिडेंट नितिन नवीन शाम को भुवनेश्वर एयरपोर्ट से दिल्ली लौटेंगे, श्री राय ने बताया। इस मौके पर स्टेट मीडिया कोऑर्डिनेटर सुजीत कुमार दास मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ओडिशा माइनिंग कॉर्पोरेशन के 71वें स्थापना दिवस में शामिल हुए

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर: लोक सेवा भवन कन्वेंशन सेंटर में हुए इवेंट में शामिल होते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि OMC, जिसने 60 के दशक में सिर्फ़ 1 करोड़ रुपये के फाइनेंशियल ट्रांज़ैक्शन से अपना सफ़र शुरू किया था, उसने फाइनेंशियल ईयर 2025-26 में 25,000 करोड़ रुपये का टर्नओवर हासिल किया है। इसके साथ ही, इसने 45 मिलियन टन मिनरल निकालकर ऑल-टाइम रिकॉर्ड बनाकर खुद को देश की एक लीडिंग माइनिंग कंपनी के तौर पर स्थापित किया है। अब समय आ गया है कि ओडिशा माइनिंग कॉर्पोरेशन अपने कामकाज का दायरा और बढ़ाए और देश के दूसरे राज्यों में माइनिंग-बेस्ड एक्टिविटीज़ शुरू करे। साथ ही, ओडिशा माइनिंग कॉर्पोरेशन के पास काफ़ी रॉ मटेरियल मौजूद है। मुख्यमंत्री ने माइनिंग-बेस्ड एक्टिविटीज़ के साथ-साथ इंडसट्रियलाइज़ेशन पर भी ध्यान देने का सुझाव दिया।

उन्होंने आगे कहा कि सात दशकों से ज़्यादा समय से, OMC ने न सिर्फ़ एक कमर्शियल कंपनी के तौर पर, बल्कि ओडिशा के इकोनॉमिक डेवलपमेंट के एक बड़े पिलर के तौर पर भी खुद को स्थापित किया है। कॉर्पोरेशन रेगुलर तौर पर अपने प्रॉफिट का एक बड़ा हिस्सा राज्य सरकार को देती रही है। OMC आज राज्य में कीमती मिनरल रिसोर्स का ज़िम्मेदारी से इस्तेमाल करके राज्य और देश की खुशहाली में एक खास योगदान दे रही है। OMC ने क्योंझर ज़िले में बांगुर क्रोमाइट माइन से प्लैटिनम ग्रुप एलिमेंट निकालने के लिए अपने पायलट प्लांट का सफल टेस्ट किया है। इसके साथ, OMC ओडिशा में क्लीन एनर्जी, इलेक्ट्रॉनिक्स और मॉडर्न मोटर व्हीकल बनाने के लिए बेसिक मेटल देने में अहम भूमिका निभाएगी। मुख्यमंत्री ने उम्मीद जताई कि OMC 2036 के खुशहाल ओडिशा विज़न को पूरा करने में अहम भूमिका निभाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023